



त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

चेतना

षष्ठहर्षा अंक

जुलै-जून, 2002



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-१।
बिहार एवं झारखण्ड, पटना

मुख्य आवरण-पृष्ठ परिचय—
कारगिल में शहीद हुये भारतीय सैनिकों
की याद में पटना के गाँधी मैदान
के पास निर्मित स्मारक।



सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
(पन्द्रहवाँ अंक)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II, बिहार एवं झारखंड, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन
वीरचन्द पटेल पथ, पटना-800 001

स्वत्वाधिकार

: महालेखाकार (ले.एवं.ह.)-II,
बिहार एवम् झारखण्ड, पटना

प्रकाशन

: 'चेतना'
(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

प्रकाशक

: महालेखाकार (ले.एवं.ह.)-II,
बिहार एवम् झारखण्ड,
पटना का कार्यालय,
महालेखाकार भवन
वीरचंद पटेल पथ,
पटना-800 001

अंक

: पन्द्रहवाँ अंक
(अप्रैल-जून, 2002)

मूल्य

: राजभाषा हिन्दी के प्रति अटूट निष्ठा

मुद्रक

: कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
42, फ्रेजर रोड, पटना-800 001
दूरभाष : 231708

चेतना परिवार

संरक्षक :

श्री राकेश कुमार वर्मा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II
बिहार एवं झारखण्ड, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति :

श्री आर० प्रसाद
वरिष्ठ उपमहालेखाकार,
बिहार एवं झारखण्ड, पटना

श्री एस० के० जयपुरियार
वरिष्ठ उपमहालेखाकार,
बिहार, एवं झारखण्ड, पटना

श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, बिहार,
एवं झारखण्ड, पटना

सम्पादक मण्डल :

प्रधान सम्पादक :

श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

सम्पादक :

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'
वरिष्ठ लेखाकार, हिन्दी कक्ष

अनुक्रमणिका

रचनाएँ

रचयिता

पृष्ठ सं.

क्र.सं.	विषय	रचनाएँ	रचयिता	पृष्ठ सं.
1.	चेतना परिवार			3
2.	अनुक्रमणिका			4
3.	महालेखाकार का संदेश			5
4.	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (निधि एवं जी.ई.) का संदेश			6
5.	वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं पेंशन) का संदेश			6
6.	सम्पादकीय			7
7.	आपके पत्र	निबन्ध	श्री रघुनाथ प्रसाद, व.उप महालेखाकार	9
8.	चकाचक पटना	निबन्ध	श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव, वरिष्ठ ले.अधिकारी	13
9.	जन्म-कुण्डली और शनि की साढ़ेसाती	कविता	श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर', वरिष्ठ लेखाकार	17
10.	उल्लू को खा गया खटस	लघु निबन्ध	श्री शिव दयाल सिंह, सहा. ले. अधिकारी	25
11.	स्वप्न क्या है ?	कविता	श्री विजय प्रकाश (साभार)	27
12.	ताजमहल और हमारा देश	लेख	श्री रणजीत कुमार सिंह, सहा. लेखा अधिकारी	28
13.	प्रशासन प्रबंधन की नई कुँजी-ई-गवर्नेंस	लेख	श्री दिलीप कुमार सिंह, लिपिक	31
14.	उपासना से ईश्वर की प्राप्ति	कहानी	श्री मनमीत कुमार, लेखा अधिकारी	34
15.	रघू	कविता	श्री चन्द्रिका सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	43
16.	कश्मीर है भारत का	यात्रा-वृत्तांत	श्री हरेराम प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार	45
17.	ब्रह्मपुर धाम	निबन्ध	श्री प्रेम शंकर प्रसाद, वरिष्ठ लेखाकार	46
18.	मानस में नारी चरित्र	कविता	श्री मनोज कुमार, लिपिक	48
19.	चेतना	ललित निबंध	श्री अजय कुमार ईसर, लिपिक	51
20.	बेचारा बैचलर	कविता	सुश्री अदिति (साभार)	52
21.	उस क्षितिज तक	लेख	श्री राजू कुमार सिंह, लेखाकार	5
22.	वेदों से	कविता	श्री रामाधार राय, वरिष्ठ लेखाकार	5
23.	संध्या नमन			

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ये रचनाकारों के निजी विचार हैं। साथ ही रचना की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं।

— प्रधान सम्पादक



सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले. एवं ह.)-॥,
बिहार एवम् झारखण्ड, पटना
का

संदेश

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

पत्रिका के समस्त रचनाकारों ने इसे सरस, भावपूर्ण एवं पठनीय बनाने का अच्छा प्रयास किया है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों का ध्यान राजभाषा हिन्दी की ओर आकृष्ट करते हुए उनके मन-प्राण में हिन्दी के प्रति चेतना जाग्रत करेगी तथा उसके विकास के लिए उन्हें प्रेरित करेगी।

पत्रिका के समस्त रचनाकारों, परामर्शदातृ समिति के सदस्यों एवं सम्पादक मंडल को उनके सार्थक प्रयत्न हेतु हार्दिक धन्यवाद देता हूँ तथा 'चेतना' के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

राकेश कुमार वर्मा
महालेखाकार (ले० एवं ह०)-॥
बिहार एवम् झारखण्ड, पटना



सत्यमेव जयते

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (जी.ई. एवं निधि), बिहार एवम् झारखण्ड, पटना का संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं लेखन क्षमता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक हमारे सहृदय पाठकों को रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक लगेगा तथा कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन भी मिलेगा।

पत्रिका के सम्पादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद एवं पत्रिका के अविरत विकास की शुभकामना !

रघुनाथ प्रसाद

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(जी०ई० एवं निधि), बिहार एवं झारखण्ड, पटना



सत्यमेव जयते

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं पेंशन), बिहार एवं झारखण्ड, पटना का संदेश

हर्ष की बात है कि इस कार्यालय से त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

आशा है, पत्रिका का यह अंक हमारे सुधी पाठकों को पठनीय लगेगा और वे इसकी रचनाओं को सराहेंगे। साथ ही यह पत्रिका सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में भी कारगर साबित होगी।

अच्छी रचनाओं के लिए समस्त रचनाकारों को और सफल प्रयास के लिए सम्पादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की अहर्निश प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामना !

एस० के० जयपुरियार

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशा. एवं पेंशन), बिहार एवं झारखण्ड, पटना

संपादकीय.....



हिन्दी एक सरल, सशक्त एवं जीवंत भाषा है । इसका क्षेत्र व्यापक है । इसकी व्यापकता के कारण ही इसे भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को भारत संघ की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में अंगीकार किया ।

वस्तुतः हिन्दी के पीछे युग और इतिहास ही नहीं, भारतीय जनता की विराट शक्ति है । यह न तो दरबार की संकीर्ण मनोवृत्ति का आश्रय पाकर पनपी है और न लोहे अथवा सोने के इशारे पर आगे बढ़ी है । कठिनाइयों के पर्वत को चीर कर बहने वाले प्रपात की तरह ही इसका अभ्युदय और विकास लोक-जीवन के अन्तस्तल से हुआ है । इसलिए इसमें युग जीवन का सच्चा दर्द है, इसकी आशा-निराशा के तरल मोती हैं । निरन्तर प्रवाह में गतिशील रहने का आग्रह और उत्साह है । बाधाओं को इसने हँसते-हँसते झेला है । भारत की स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन की विशाल साधना का भार वहन करके भी इसने अपनी सामर्थ्य साबित कर दी है । तभी तो अहिन्दी प्रान्त के भी राष्ट्र नेताओं ने उन्मुक्त भाव से हिन्दी को भावात्मक एकता का एकमात्र राष्ट्रीय सूत्र समझा और माना था । हिन्दी के विरोध में अन्य बोलियों को, भाषाओं को खड़ा करके भी हिन्दी को अब अपदस्थ नहीं किया जा सकता है ।

आज परिस्थिति ने करवट ले ली है । हम स्वतंत्र हैं । हमारा देश स्वाधीन है । हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी है । राष्ट्रभाषा किसी भी देश की एक अनिवार्य आवश्यकता होती है जिसके सहारे राष्ट्र बोलता है, लोक जीवन में वैचारिक जागृति और एकसूत्रता लाता है । इसलिए हमें प्राण-पण से हिन्दी के सम्यक विकास के लिए तत्पर और प्रयत्नशील रहना चाहिए । हमारे संविधान में 'हिन्दी' को राजभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है । संविधान के

प्रावधानों को सक्रियता से कार्यान्वित करना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। इसमें हिन्दी भाषी जनता का, खासकर सरकारी कर्मचारियों का महत्वपूर्ण दायित्व के निर्वाह हेतु सरकारी कामकाज में हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग करना अत्यावश्यक है।

आज हिन्दी अपने आँचल में सम्भावना और राष्ट्र के स्वप्नों को लिए हुए तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। इसकी इसी निरन्तर गति में एक कड़ी के रूप में जुड़ने का प्रयास करती है हमारी कार्यालयीय हिन्दी पत्रिका 'चेतना' जिसका उद्देश्य अपनी राष्ट्रीय भाषा और संस्कृति के मंगल विकास की आकांक्षा है। इस आकांक्षा की पूर्ति में पत्रिका कहाँ तक सफल हुई है—यह सुधी पाठक ही बता सकते हैं। लेकिन इतनी बात जरूर है कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह पत्रिका निरन्तर प्रकाशित की जा रही है।

अन्त में, हिन्दी के अनन्य प्रेमी एवं पत्रिका के संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा जी के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके अमोल मार्ग दर्शन से पत्रिका के प्रकाशन में मदद मिली है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं जीवंत संरचना हेतु पत्रिका के सम्पादक श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' एवं पत्रिका के प्रकाशन एवं रूप-सज्जा में पूर्ण सहयोग के लिए श्री अजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, जी.डी. अनुभाग को साधुवाद देता हूँ। साथ ही रचनाकारों को भी उनकी अच्छी रचनाओं के लिए धन्यवाद देता हूँ।

— प्रधान सम्पादक



आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 13वें एवं 14वें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' एक उच्चस्तरीय पत्रिका है। इसमें प्रकाशित रचनाएँ सारगर्भित, रोचक तथा पठनीय हैं। आवरण पृष्ठ सुन्दर एवं मनोहारी है।

अच्छी रचनाओं के लिए समस्त रचनाकारों एवं सार्थक प्रयत्न के लिए सम्पादक मंडल को धन्यवाद। 'चेतना' के चतुर्दिक विकास की हार्दिक कामना।

उत्तर प्रदेश 10.12.2001

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी),
महालेखाकार (ले० प०)-1, उत्तर प्रदेश

...

'चेतना' का संयुक्तांक प्राप्त हुआ। एतदर्थ विपुल धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सामग्री के चयन हेतु सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की रूप-सज्जा एवं रचनाएँ राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्यालय की सुरुचि एवं सक्रियता की परिचायक हैं। निश्चय ही इससे सरकारी कामकाज के प्रति राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में सहयोग मिलता है।

श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव का लेख "राजभाषा हिन्दी" ज्ञानवर्द्धक व संग्रहणीय है। श्री रणजीत कुमार सिंह का "कम्प्यूटर" पर आधारित लेख भी प्रशंसनीय है। साथ ही श्री हरेश्वर प्रधान की कहानी 'एक मौका और' तथा श्री नाहर की कविता "रंगदारी व आतंकवाद" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। चारों रचनाकारों को रोचक प्रस्तुति के लिए धन्यवाद।

ग्वालियर
21.12.2001

सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी)
एवं प्रधान संपादक "वीरांगना"
महालेखाकार (ले० एवं ह०)-11, मध्य प्रदेश
एवं छत्तीसगढ़ का कार्यालय

...

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का संयुक्तांक प्राप्त हुआ। पत्रिका को पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। पत्रिका में छपे सभी लेख अति उत्तम भावप्रेक्षित, सारगर्भित, मर्मस्पर्शी एवं प्रेरणादायक हैं। इनमें से श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा रचित लेख 'राजभाषा हिन्दी' तथा सुश्री मीनाक्षी कुमारी द्वारा लिखित निबन्ध 'भारतीयता का स्वरूप' रचनाकारों का सार्थक प्रयास है। इनसे पाठकों को सुरुचिपूर्ण एवं जानकारीप्रद लाभ होगा।

मैं पत्रिका के सम्पादक एवं सम्पादक मंडल को पत्रिका के उत्तम सम्पादन के लिए बधाई देता हूँ तथा इसकी निरन्तर प्रगति की कामना करता हूँ ।

नई दिल्ली

26.12.2001

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, (राजभाषा)

महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व

नई दिल्ली का कार्यालय

...

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का संयुक्तांक प्राप्त हुआ । पत्रिका में संकलिता सभी रचनाएं अत्यन्त रोचक, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्द्धक हैं । श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' की कविता 'रंगदारी व आतंकवाद' तथा श्री विजय कुमार का लेख 'नई शताब्दी में राष्ट्रीय समस्याएँ' बहुत ही रोचक लगे ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।

शिमला

28.12.2001

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी,

महालेखाकार (ले०प०), हिमाचल प्रदेश

शिमला का कार्यालय

...

आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 13वें एवं 14वें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई । इसके लिए धन्यवाद ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्तम एवं पठनीय सामग्री से परिपूर्ण हैं तथापि श्री राम प्रताप सिंह 'मधुप' का लेख 'हिन्दी के पचास वर्ष और राष्ट्र', श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' की कविता 'रंगदारी व आतंकवाद' तथा सुश्री मीनाक्षी कुमारी का लेख 'भारतीयता का स्वरूप' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं प्रभावी रचनाएं हैं ।

पत्रिका की सर्वतोमुखी प्रगति एवं बहुआयामी विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

लेखा भवन, वालियर

4.1.2001

प्रधान सम्पादक 'दर्पण'

एवं सहायक ले. अधिकारी (राजभाषा)

महालेखाकार (ले. एवं ह.)-1, मध्य प्रदेश

एवं छत्तीसगढ़ का कार्यालय

...

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का संयुक्तांक प्राप्त हुआ। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में सन्निहित रचनाओं के चयन हेतु सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हैं। सभी रचनाएं ज्ञानवर्द्धक एवं जनोपयोगी हैं तथापि श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव जी का लेख 'राजभाषा हिन्दी' तथा श्री बंशीधर मिश्र का लघु निबंध 'अगर' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और उत्तरोत्तर विकास के लिए शुभकामनाएं।

राँची

15.1.2002

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)-1

बिहार एवं झारखंड का कार्यालय

...

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के तेरहवें एवं चौदहवें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट लेख - 'हिन्दी के पचास वर्ष और राष्ट्र, 'मौत', कविता- 'औकात', 'हम सब एक हैं' तथा कहानी - 'एक मौका और' सराहनीय हैं। इसके साथ ही सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। आपकी पत्रिका 'चेतना' हिन्दी की प्रगामी प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। पत्रिका एवं हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्यरत सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

चेन्नई

18.1.2002

हिन्दी अधिकारी,

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1, तमिलनाडु

एवं पांडिचेरी का कार्यालय।

...

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव का लेख 'राजभाषा हिन्दी', श्री रघुनाथ प्रसाद की कविता 'औकात', श्री रणजीत कुमार सिंह का लेख 'आइए, अपनाएं सहस्राब्दी की रीढ़ - कम्प्यूटर को' एवं श्री भागीरथ लाल दास का लेख 'आज की परिधि में रहना सीखें' पाठकों को आकर्षित करते हैं। हिन्दी कक्ष द्वारा दी गई रिपोर्ट 'हिन्दी पखवाड़ा' को पढ़ने से लगता है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आपके कार्यालय का योगदान सराहनीय है। पत्रिका में सम्मिलित अन्य रचनाएं मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं। बेहद आकर्षक कला
पृष्ठ हेतु विशेष बधाई।

इलाहाबाद
21.1.2002

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी),
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)-1,
उत्तर प्रदेश का कार्यालय

...

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट हैं। रचनाएं न केवल पठनीय हैं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। श्री के. एन. शुक्ल द्वारा लिखित निबन्ध 'जीवन' विशेष रूप से सराहनीय है।

सभी रचनाकार तथा सम्पादक मंडल श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें। आशा है कि आगामी अंक और भी रोचक होगा।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना।

नई दिल्ली
21.1.2002

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय

...

'चेतना' पत्रिका के संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुखपृष्ठ उत्कृष्ट एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं न केवल पठनीय हैं अपितु संग्रहणीय भी हैं। ललन प्रसाद श्रीवास्तव का लेख 'राजभाषा हिन्दी' एवं श्री संजय कुमार मिश्र की लघुकथा 'दामा' तथा श्री राजू कुमार सिंह की कविता 'कौन हो तुम' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मंडल को श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई। पत्रिका के अविरल प्रगति की हार्दिक शुभकामना।

भोपाल
18.0.3.02

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, मध्य प्रदेश
एवं छत्तीसगढ़, भोपाल का कार्यालय

★ ❁ ★

चकाचक पटना

श्री रघुनाथ प्रसाद
वरिष्ठ उप महोलखाकार

सन् 2001 में दिवाली के कुछ दिन पहले पटना शहर के अनेक भागों में किसी दल या संस्था के नेताओं द्वारा एक छपा पोस्टर लगाया गया था। जिसका शीर्षक था "चकाचक पटना"। यह पोस्टर नगरपालिका में कार्यरत सफाई कर्मचारियों के वेतन के मामले पर बिहार सरकार, पटना विकास प्राधिकरण से न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद हड़ताल समाप्ति के बाद लगाया गया था। हड़ताल करीब जुलाई, 2000 से चल रही थी, लेकिन हड़ताल के अन्तर्गत किसी भी संस्था या नेता का नामोनिशान नहीं था। अब हड़ताल समाप्त हो गयी थी एवं दिवाली/छठ जैसे पवित्र पर्व नजदीक थे। अतः नाम या यश लूटने के लिए या यूनिसेफ से अनुदान की धनराशि मिलते ही, उन व्यक्तियों से जुड़ी संस्थाओं ने पोस्टर के साथ शहर में प्रचार अभियान तेज कर दिया। यद्यपि कि पोस्टर लगाने के पहले ही सफाई संबंधी कार्य-नियमित रूप से चल रहा था। 16-17 महीने में लगी गंदगी का अम्बार अब छूट रहा था। शायद यूनिसेफ से प्राप्त धनराशि के उपयोग से भी जनता को जानकारी देना अपेक्षित समझा गया हो। जो भी हो हमें तो अपने अनुभव को बताना आवश्यक जान पड़ता है। इन संस्थाओं से सम्बद्ध लोगों से क्षमायाचना के साथ अपना अनुभव निम्न पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त करना चाहता हूँ।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। असली प्रतिबिम्ब भी दर्पण की अपनी गुणवत्ता पर निर्भर है क्योंकि कभी दर्पण की अवगुणता के कारण प्रतिबिम्ब छोटा, बड़ा या विकृत दिखाई पड़ता है। फिर भी दर्पण की विकृति को ध्यान में न रखते हुए यह माना जाता है कि दर्पण असली प्रतिबिम्ब ही दर्शाता है। प्रत्येक लेख या लेखक की कृति में सामाजिक प्रतिबिम्ब अवश्य झलकता है, जो समाज में प्रचलित होता है वह लेखक की लेखनी पर आ जाती है चाहे वह उसके विपक्ष के लिए या उसके पक्ष में।

स्नातकोत्तर विद्योपार्जन पटना विश्वविद्यालय से ही किया किन्तु करीब 34-35 साल के बाद मेरा पटना में पुनरागमन हुआ। मुझे आये भी एक साल से अधिक हुआ है। राज्य के बाहर रहने के कारण शुरू में समाचार पत्रों के द्वारा राज्य के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करता। यहाँ के सरकारी कामकाज और व्यवस्थाओं के विषय में पढ़ता, किन्तु अब प्रत्यक्षदर्शी हूँ। कुछ पहलुओं को देखता हूँ, पढ़ता हूँ फिर गुनता हूँ। आखिर क्यों और कैसे इसे सुव्यवस्थित किया जा सकता क्योंकि कुव्यवस्था का कारण जानना उसके निवारण की सुव्यवस्था होगी।

साल भर पहले मैं अनेक वर्षों बाद इस शहर में आया था। यह इत्तफाक था कि हाजीपुर से आने वाली बस पटना आयी, किन्तु रेलवे स्टेशन के सामने (करबिगहिया में) ही रुक गयी और फिर रेलवे

स्टेशन का उपरीपुल (Over Bridge) पार करके रिक्शा से हार्डिंग पार्क स्थित वीरचन्द पटेल आना पड़ा। उस दिन बरसात हुई थी। सड़क पर सारे कूड़े-कड़कट की गन्दगी वैसे ही बह रही थी कि विश्वास नहीं हुआ कि इतनी गन्दगी सड़क पर कैसे आ गयी। जगह-जगह पर कूड़े का ढेर था। बाद दुर्गन्ध और महादुर्गन्ध फैला रहे थे। मुझे लगा कि बरसात की वजह से नालों में अधिक जल के कारण सभी कूड़े नाले से बाहर बह कर सड़क पर आ गये। फिर चाणक्य होटल के सामने ऐसी दुर्गन्ध-सड़ांध ने नाक में प्रवेश किया कि मिचली आ गयी। लगा कि उस जगह से अब कितनी जल्दी दूर भाग जायें। सूअर उसमें मुँह लगाये, घोंघिया रहे थे। शायद सूअर नहीं होते तो भी आ जाइए यहाँ पर अनेकों महान विभूतियों की मूर्तियाँ पदस्थापित की गई हैं क्योंकि उनके स्मारक के लिए जमीन आवंटित है। लेकिन वहाँ नगर निगम द्वारा कूड़े डाल कर गढ़ों को भरा जा रहा है। वहाँ से गुजरने पर सड़ांध की दुर्गन्ध नाक ही नहीं सिर को फाड़ देती है। पता नहीं ये महान पुरुष जिनके बस्तु स्थापित किए गये हैं कैसे उन गलीजों में सालों से अहिर्निश पड़े रहते हैं। यही नहीं उस में कम से कम दो बार उन महान व्यक्तियों की जन्मशती और पुण्यतिथि बड़े धूमधाम से मनायी जाती है। उस कूड़े एवं सड़ांध में बड़े-बड़े लोग आकर बैठते हैं, पूजापाठ कर श्रद्धान्जली भी देते हैं। उन नेताओं द्वारा जीवनकाल की उपलब्धियों का बखान करते हैं। धन्यभाग उस कूड़े-कचरे के, जहाँ आज के महापुरुष उस सड़ांध का आनन्द लेते हैं। भोजन, चाय-पान भी करते हैं। उसमें मंत्री, प्रशासक, समाज सुधारक और अनुयायी भी होते हैं। मुझे दर्शक के रूप में बातों को लिखने में भी शर्म आती है, लेकिन उन नेताओं/प्रशासकों को उस सड़ांध में घंटों बैठकर श्रद्धान्जली देने में शर्म नहीं आती। उन जगहों पर सड़ांधमुक्त करने को किसी को चिन्ता नहीं। फिर एक दिन एक घन्टे के लिए उस कूड़े-कचरे में जाकर आरती करना आडम्बर या ढोंग नहीं तो और क्या है? क्या उन महापुरुषों को समाज सुधार की इच्छा शक्ति है? कतई नहीं! सभी सफेद कुर्ता धोती पहने केवल भाषण देने वाले ढोंगी ही उस जगह को स्थायी तौर पर साफ कर सड़ांध मुक्त रखना ही उस नेता के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धान्जली होती। लेकिन नहीं, अभी ढोंग और आडम्बर मनुष्य की प्रकृति में प्रवेश कर गयी है। कथनी और करनी में काफी अन्तर है। आइए हम अपने अनुभव से उस कूड़े की जीवनी पर प्रकाश डालें।

सामान्यतः कूड़े घरों से कूड़ेदान तक आते हैं जो एक सामान्य प्रक्रिया है। कूड़े को कूड़ेदान व्यवस्थित रूप से रखने की जगह गंदगी नहीं फैलती, साथ ही सफाई कर्मचारी या नगर निगम कर्मचारी / श्रमिक उसे भार-वाहन या मशीन वाहनों के द्वारा उठाकर शहर-बस्ती से दूर फेंकते हैं जिस अगल बगल के निवासी प्रदूषण के शिकार न हो सकें। शहरों में यह देखने में आता है कि छोटे-बड़े गद्दों को पाटने के लिए मिट्टी नहीं मिलती और मिलती भी है तो शहर से दूर। मिट्टी खरीदने, उखाड़ने एवं लादने में श्रमिकों की मजदूरी के अतिरिक्त वाहन-भाड़ा और वाहन-मालिक का लाभ, आदि काफी लागतपूर्ण होता है। अतः गद्दों को पाटने के लिए नगर-निगम के कर्मचारियों से सम्पर्क कर श

के सड़-गले सभी कूड़ों से पाटने के लिए नगर-निगम से सम्पर्क कर लेते हैं। नगर-निगम को कूड़ा फेंकने के लिए स्थायी जगह आसानी से मिल जाती है चाहे कूड़े की सड़ाँध कितनी ही प्रदूषण क्यों न फैलाए। उस सड़ाँध में सूअरों का घों-घों कर थूथना डुबा कर पर्याप्त भोजन प्राप्त करना, साथ में लड़ाई करते भागना और भागने के साथ किलो-दो किलो का कूड़ा बदन में लपेटे सड़क या आसपास में फैलाना आम बात है। इससे न कूड़े को हानि होती है न सूअर वालों को। राहगीर तो नाक दबा कर सड़क पार कर लेता है। कुछ समय के बाद वहाँ के निवासी भी अभ्यस्त हो जाते हैं। क्या करें? बीमारी ला-इलाज जो है, अतः उसका सामना कराना ही पड़ता है। ये कूड़े की सामान्य प्रक्रिया है।

अब आइये हम कूड़े की विशेष परिस्थितियों पर विचार करें। पटना शहर प्रायः हड़ताली लोगों का शहर है। प्रत्येक कार्य के लिए संघ बने हैं। राजनीतिक दल है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व एवं बाद तक राजनीतिक दल केवल राजनैतिक मामलों के लिए सरकार से असहयोग करते थे तथा हड़ताल द्वारा अपनी आकांक्षाओं को प्रदर्शित करते थे। समयानुसार श्रमिक कानूनों में बदलाव आया एवं हड़ताल को श्रमिकों एवं विभिन्न संघों द्वारा एक हथियार के रूप में उपयोग किया जाने लगा। श्रमिक कानून में शिथिलता तथा संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता इत्यादि प्रशासन की शिथिलता, अर्थिक कमजोरी कई कारणों से हड़ताल मुख्य साधन हो गया और अब तो बेली रोड पर हड़ताल करने के स्थान के नाम को "हड़ताली मोड़" नामकरण हो गया। इस नाम से उस जगह की पहचान जल्दी होती है। आप कहेंगे कि हड़ताल से इस कूड़े का क्या संबंध है? जी हाँ, सम्बंध है। आगे-आगे देखिये होता क्या है?

पटना नगर निगम एक स्वायत्त संस्था है। उसके सदस्य चुनाव द्वारा निर्वाचित होते हैं। उनके अधिकार और कर्तव्य हैं। शहर के नामी गिरामी लोग चुनाव जीतते हैं। मेयर और सदस्य। उच्च अधिकार प्राप्त सरकारी अधिकारी प्रशासक होते हैं। उनको शहर वासियों पर कर लगाना तथा उनसे उगाही करने का अधिकार है। नहीं देने पर दण्ड आरोपित की भी शक्ति दी गई है। प्राप्त आय से विकास कार्यों की परिपूर्ति की जाती है। अभाव में सरकार द्वारा एक बड़ी राशि अनुदान से प्राप्त होती है। सभी राशि नगर-निगम के कोष में जमा होती है एवं वहीं से प्राधिकृत अधिकारी की अनुमति से योजना-गैरयोजना पर कार्यक्रम के अनुसार खर्च की जाती है। पटना नगर निगम द्वारा कर उगाही होती है या कितना बकाया है? उसे निगम के रिकार्ड देखने से पता चलता लेकिन खर्च में मुख्य खर्च सफाई कर्मचारियों का वेतन देना है क्योंकि पानी जमाव वाले इलाके में नाली नहीं है एवं नाले का पानी भी सड़क के बीचों बीच ही बहता है। अगर बरसात हो गयी तो क्या कहने? सड़क, सड़क नहीं रहती बल्कि गन्दे पानी का सैलाब हो जाती है। तो बात आती है कि धन की कमी। धन की कमी हो पर निगम या प्रशासकों द्वारा बिहार सरकार को गुहार लगानी पड़ती है। गुहार सुन सरकार की शर्त अवरोद्ध होने लगती क्योंकि जो अनुदान नियमित दिया जाता है उसकी अवमुक्ति ही समय पर न होती। फिर नगर निगम के कर्मचारियों, सफाई वालों के बढ़ते वेतन भुगतान की माँग कहाँ से पूरी जाय। सरकार की अपनी कर उगाही नहीं होती। निगम द्वारा करों की उगाही नहीं होती। कर

वाले भला कैसे आसानी से कर देंगे ? धन की कमी से कर्मियों की माँग पूरी करने की सामर्थ्य अतः माँगों को मनवाने के लिए कर्मियों के पास कोई चारा नजर नहीं आता। उन्हें निगम के आय-व्यय के गणित से क्या मतलब ? उन्हें तो वेतन चाहिए, चाहे निगम किसी स्रोत से रुपये उधार करे। ऐसा देखने में आया है कि निगम के पास beg, borrow or steal की स्थिति रहती है। अतः निगम अनुदान की माँग की जाती है जो समय पर अवमुक्त नहीं होती और वह अपर्याप्त होती है। अतः निगम कर्मचारी हड़ताल करते हैं। काफी दिनों तक हड़ताल पर रहने के बावजूद उनकी माँगों की पूर्ति भी नहीं हो पाती। निगम प्रशासन कौन सा मुँह लेकर कर्मियों के पास हड़ताल समाप्त करने के निवेदन करे। सरकार से अनुदान की माँग का कोई असर नहीं होता। आजिज होकर सफाई कर्मियों में बढ़ी हुई गन्दगी को और भी उजागर करने के लिए या सरकारी अमलों को नीचा दिखाने के लिए शहर के कूड़ादानों में सड़े पड़े कूड़ों को उठाकर व्यस्त सड़कों पर बिछा देते हैं जिससे लोगों का कूड़ों और गन्दगी पर जाय और सड़कों से तंग आकर जनता सरकार पर सफाई के लिए दबाव डाले।

इस प्रकार से सड़क पर पड़े गन्दे कूड़े को डालकर जनता का ध्यान आकर्षित कर आम बात गयी है। उन्हें इस बात को लेकर जरा भी शर्म या एक नागरिक होने के नाते उनका कर्तव्य क्या है, तरफ ध्यान नहीं जाता। यह बात अवश्य है कि भूखे भजन न होहि गोपाला अर्थात् कर्म एवं उनके कर्तव्य भूखे रहकर अनिश्चित काल तक काम नहीं कर सकते। भरण-पोषण के लिए अर्थ की आवश्यकता अवश्य है, लेकिन अपने साध्य की पूर्ति के लिए अपनाये गये साधन उचित नहीं लगते। जमा एवं सहे कूड़े-कचड़ों से जनस्वास्थ्य पर प्रदूषण का गहरा असर होता है उन्हें इसका तनिक भी खयाल नहीं होता।

सफाई कर्मियों की हड़ताल से दी चुनौती तो अलग बात है फिर भी शहर के प्रबुद्ध नागरिक जिम्मेदारी सही ढंग से नहीं निभा पाते। यह मानी हुई बात है कि अधिकतर कूड़े घरों से ही निकलते हैं लेकिन प्रबुद्ध नागरिक कम-से-कम कूड़े को सही स्थान पर डालते हैं तथा उसके उठाये जाने की प्रतीक्षा करते हैं। यह देखने को मिला है कि प्रबुद्ध नागरिकों की कॉलनियों में भी कूड़ा सड़कों पर फेंका जाता है। आते-जाते सभी देखते हैं किन्तु सही स्थान पर फेंकने की सीख अपने घरों में नहीं देते। आदत-सी बन जाती है क्योंकि वे कूड़े को उठाने की जिम्मेदारी सफाई कर्मियों या निगम को देते हैं, निगम को या कर्मियों के कामों को हीनभावना से देखते हैं। उसे कूड़ा साफ करने वाला निम्न जाति के व्यक्ति समझते हैं लेकिन समाज को साफ सुथरा रखकर प्रदूषण-मुक्त रखने में उस महान व्यक्ति का कितना हाथ होता है यह नहीं सोचते। गाँधी जी ने उन्हें महान या महत्तर (मेहत्तर) सम्बोधित किया था और समाज में प्रबुद्ध लोग उनके कार्यों के महत्व का आकलन कब करेंगे ? आकलन केवल सफाई से ही नहीं बल्कि उनके द्वारा कर्मों का समय पर भुगतान, सामाजिक चेतना का जागरण, उन कामों में लगे व्यक्तियों के कामों को उचित सम्मान और अपनी सोच-समझ में उनके प्रति बदलाव और सहयोग का रवैया अपनाने में ही है। आशा है कि इस कूड़े-कचड़े की कहानी पढ़ सभी प्रबुद्ध सज्जनों की समझेंगे और समाज में सफाई के प्रति जागरूकता का माहौल उत्पन्न करेंगे।





जन्म कुण्डली और शनि की साढ़ेसाती

श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव, वरिष्ठ ले. अधिकारी

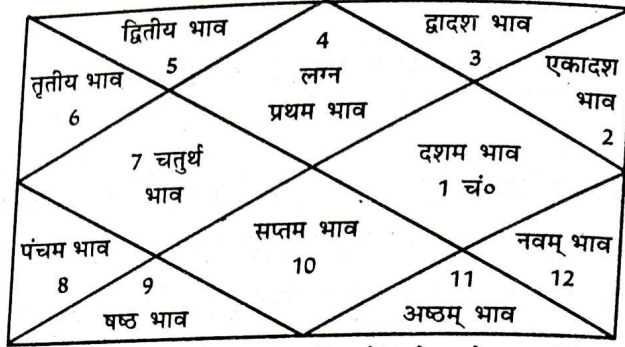
ज्योतिषशास्त्र में कुण्डली-निर्माण पूर्णतः गणित पर आधारित है जिसमें ग्रह-राशि एवम् नक्षत्र की स्थिति दर्शायी जाती है। नक्षत्र तारों के समूह हैं जिनकी संख्या सत्ताईस है। राशियाँ बारह हैं तथा ग्रह सात। राहू-केतु छाया ग्रह है। इन दोनों को जोड़ दिया जाय तब ग्रहों की संख्या नौ होगी। कुण्डली में बारह खाने (घर) होते हैं जिन्हें ज्योतिष शास्त्र की भाषा में भाव कहा जाता है। प्रथम भाव को लग्न भाव कहा जाता है। उत्तर भारत में एक लग्न कुण्डली और एक चन्द्र कुण्डली निर्माण करने की परम्परा है जबकि दक्षिण भारत में लग्न कुण्डली और नवांश कुण्डली निर्माण की परम्परा है। बालक के जन्म समय में दिन का उतना अंश जितने में एक राशि का उदय होता है, लग्न कहलाता है। दिन-रात में (अहोरात्र) में 12 राशियों का उदय होता है। इसलिए ज्योतिष शास्त्र में 12 लग्नों को माना जाता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि एक राशि के उदयकाल को लग्न कहते हैं। गणितीय विधि द्वारा लग्न साधन करके लग्न स्पष्ट एवम् ग्रह स्पष्ट करके कुण्डली के प्रत्येक भाव में राशियों एवम् ग्रहों की स्थिति दर्शायी जाती है। इन्हीं ग्रह-राशि के परस्पर संबंध के आधार पर भविष्यवाणी की जाती है। जो ज्योतिष शास्त्र का फलित पक्ष है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्योतिष शास्त्र के फलित पक्ष यानी फल कथन या भविष्यवाणी पूर्णतः उसके गणित पक्ष पर निर्भर है। यदि कुण्डली निर्माण में गणित की भूल से लग्न या ग्रह-स्पष्ट में कहीं चूक होगी तो ऐसी कुण्डली के विषय में की गई भविष्यवाणियाँ सही नहीं होंगी। अक्सर ऐसा पाया जाता है कि कुण्डली निर्माण में भूल की गई है फलतः फल-कथन में चूक ज्योतिष शास्त्र की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिन्ह बनकर सदैव खड़ा रहता है। प्रबुद्ध पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि ज्योतिष शास्त्र पर यानी फल-कथन पर संदेह करना ज्योतिष-शास्त्र की अपूर्णता का द्योतक है या अयोग्य व्यक्तियों द्वारा कुण्डली निर्माण में की गई भूल का परिचायक है।

ज्योतिष की नींव गणित पर आधारित है तथा फलित ज्योतिष इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है, अतः यह अतिआवश्यक है कि कुण्डली निर्माण में ग्रह-राशि नक्षत्र का सही निरूपण किया जाय अन्यथा गणित की त्रुटि कुण्डली विशेष पर की गई भविष्यवाणी को प्रभावित कर सकती है।

ऊपर लग्न कुण्डली एवम् चन्द्र कुण्डली की बात कही गई है। कुण्डली के सबसे ऊपर वाले खाने (भाव) को लग्न माना गया है और बालक के जन्म समय में लग्न साधन के पश्चात् जिस राशि का उदय पाया जाता है उस राशि की संख्या उस खाने में लिख दी जाती है। इसी प्रकार उससे आगे की राशियों की संख्यायें घड़ी की विपरीत दिशा (एन्टी क्लॉक वाइज) में कुण्डली के प्रत्येक खाने में

दर्शायी जाती है। इस प्रकार 12 राशियों की स्थिति कुण्डली के बारह भावों में प्रदर्शित की जाती है।

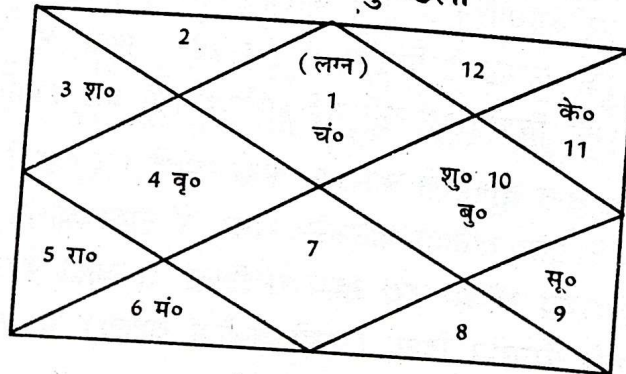
लग्न कुण्डली



लग्न साधन / स्पष्ट करने के पश्चात ग्रह स्पष्ट करके जो-जो ग्रह जिन-जिन राशियों में जन्म-समय में पाये जाते हैं उन्हें ऊपर के उन भावों में प्रदर्शित किया जाता है। उदाहरणार्थ कुण्डली के प्रथम भाव (लग्न) में संख्या 4 है जो राशि का सूचक है। राशियाँ बारह हैं जो क्रमानुसार इस प्रकार हैं :-

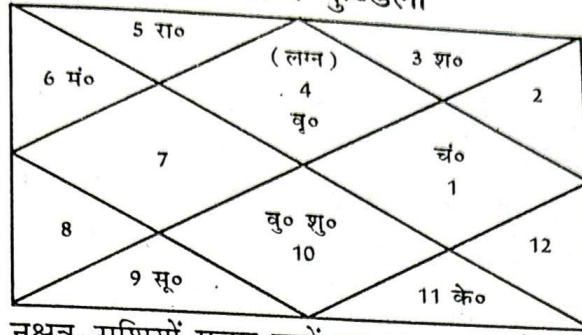
1. मेष 2. वृष 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12. मीन। कुण्डली के प्रथम भाव में 4 की संख्या कर्क राशि की सूचक है वैसे ही अन्य भावों की राशि संख्या से राशि-नाम उपर्युक्त राशि क्रमांक के अनुसार समझ सकते हैं। ऊपर के बारह भाव जिनमें 12 राशियों को प्रदर्शित किया गया है इन्हीं बारह भाव और बारह राशियों में नौ ग्रहों की स्थिति हो सकती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि सभी नौ ग्रह-सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु अलग-अलग नौ राशियों और नौ भावों में ही स्थित रहें। ग्रहों की राशि विशेष में स्थिति बालक के जन्म-समय में उनकी अवस्था (स्थिति) पर निर्भर करता है और यह सम्भव है कि एक से अधिक ग्रह जन्म-समय में एक ही राशि में स्थित हो। चन्द्र कुण्डली निर्माण में यह देखा जाता है कि चन्द्रमा कुण्डली में किस राशि में स्थित है। चन्द्रमा जिस राशि में स्थित रहता है वही राशि बालक की जन्म-राशि कहलाती है। ऊपर की कुण्डली में चन्द्रमा दशम भाव में मेष राशि (1) में स्थित है। अतः बालक की जन्म राशि मेष होगी और तदनुसार चन्द्र लग्न की कुण्डली बना दी जायेगी। चन्द्र कुण्डली का एक उदाहरण आगे है जिसमें स्थिति स्पष्ट करके उदाहरण स्वरूप ग्रहों की स्थिति भी दर्शायी गई है।

चन्द्र लग्न कुण्डली



इन्हीं ग्रहों की स्थिति लग्न कुण्डली में आगे दर्शायी जा रही है :

जन्म-लग्न कुण्डली



जातक की कुण्डली में नक्षत्र-राशियों एवम् ग्रहों का प्रभाव उनके गुण-दोष के आधार पर पड़ता है और कुण्डली के भाव-विशेष में उनकी स्थिति, ग्रहों-राशियों के परस्पर सम्बंध तथा बल के अनुसार जातक को शुभ या अशुभ फल देते हैं। ऊपर बताये गये नौ ग्रहों में चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र को शुभ ग्रह तथा सूर्य, मंगल, शनि, राहू और केतु को अशुभ ग्रह माना जाता है। सभी नौ ग्रह एवम् बारह राशियाँ मनुष्य के अंग विशेष पर अपना प्रभाव रखते हैं और जब ये ग्रह, नक्षत्र विशेष या राशि विशेष में परिभ्रमण करते हुए पहुँचते हैं तब उस समयावधि में अपने गुण-दोष के अनुसार मनुष्य के उन अंगों या तत्त्वों पर विशेष प्रभाव डाल सकते हैं जिन अंगों या तत्त्वों (कारक) को ये ग्रह निरूपित करते हैं। ये ग्रह-राशि कुण्डली के भाव-विशेष में अपनी स्थिति से उन भावों से सम्बन्धित फल को भी शुभ-अशुभ रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इस निबंध के आकार को ध्यान में रखते हुए यहाँ यह सम्भव नहीं है कि सभी 27 नक्षत्रों, 12 राशियों और नौ ग्रहों के गुण-दोष, कारकत्व दृष्टि सम्बंध की पूर्ण व्याख्या की जाय किन्तु पाठकों के जानकारी हेतु कुण्डली के बारह भावों से सम्बंधित बातों का उल्लेख संक्षेप में प्रस्तुत है :

भाव

प्रथम भाव
द्वितीय भाव
तृतीय भाव
चतुर्थ भाव
पंचम भाव
षष्ठ भाव
सप्तम भाव
अष्टम भाव
नवम भाव
दशम भाव
एकादश भाव
द्वादश भाव

भाव से सम्बंधित तथ्य

शरीर, स्वास्थ्य, आचरण
धन, कुटुम्ब, मृत्यु का कारण
पराक्रम, सहोदर, साहस
मातृ-सुख, भवन, सवारी
विद्या, संतान, इत्यादि
शत्रु, रोग, ऋण
पति या पत्नी, दैनिक रोजगार, भोग-विलास
आयु, मृत्यु, दुर्घटना
भाग्य, विदेश यात्रा, धर्म
राज्य, नौकरी, कर्म
लाभ
हानि, व्यय

बालक के जन्म-समय में जिस कुण्डली का निर्माण किया जाता है उस कुण्डली के बारह भाव

में, बारह राशियाँ तथा नौ ग्रहों की स्थिति उस काल-विशेष की स्थिति होती है जिस समय बालक जन्म लेता है। अतः जो-जो ग्रह जिस-जिस भाव में जन्म-समय में होंगे वे ग्रह उस बालक के सम्पूर्ण जीवन में स्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते रहेंगे, यह ज्ञात है कि सभी ग्रह गतिशील हैं। अतः ग्रहों का कालीन स्थिति एक राशि या नक्षत्र में स्थायी रूप से पड़े रहना सम्भव नहीं है। ये सभी ग्रह अपनी-अपनी गति की दिशा में अपने-अपने मार्ग से सदैव भ्रमण करते हुए एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते रहते हैं। अतः जन्म समय में ग्रहों की विभिन्न राशियों में स्थिति उनकी उस बालक विशेष की जन्म-कालीन स्थिति है जो कुण्डली का मूलधार है किन्तु जन्म समय के अनन्तर इन ग्रहों का उनकी गति के कारण एक राशि से दूसरी राशियों में प्रवेश की क्रिया "गोचर" कहलाती है।

कुण्डली के फल-कथन में ग्रहों के गोचर स्थिति का भी ध्यान रखना अनिवार्य होता है क्योंकि ग्रहों की यही गोचर स्थिति व्यक्ति के सम्बन्ध में काल-विशेष में घटने वाली घटनाओं का संकेत देती है। सम्पूर्ण आकाश मंडल 360 अंशों का है जिसमें 27 नक्षत्र स्थिर हैं और इन्हीं 27 नक्षत्रों में 12 राशियाँ बँटी हुई हैं अतः साधारण गणितीय विधि से एक राशि $360/12 = 30$ अंश की होती है किन्तु सभी ग्रहों की गति एक समान नहीं होने के कारण इन नौ ग्रहों को बारह राशियों में परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लगता है। फलतः कोई ग्रह किसी राशि विशेष में एक माह तक टिके रह सकता है तो कोई ग्रह $2\frac{1}{2}$ वर्ष तक जबकि चन्द्रमा एक राशि में मात्र 54 घंटे यानी सवा दो दिन ही टिके हैं। ऐसा इसलिए होता है कि सभी ग्रहों की अपनी-अपनी गति एवम् मार्ग अलग-अलग हैं। यहाँ पर की 12 राशियों में परिभ्रमण तथा एक राशि में परिभ्रमण की अवधि दी जा रही है :

पूर्ण राशि चक्र (12 राशियों में)

ग्रह
सूर्य
चन्द्रमा
मंगल
बुध
वृहस्पति
शुक्र
शनि
राहु
केतु

एक वर्ष
27 दिन
18 माह
एक वर्ष
12 वर्ष
एक वर्ष
30 वर्ष
18 वर्ष
18 वर्ष

एक राशि में

30 दिन
सवा दो दिन
45 दिन
30 दिन
12 माह (एक वर्ष)
27 दिन
30 माह यानी ढाई वर्ष
18 माह (डेढ़ वर्ष)
18 माह (डेढ़ वर्ष)

पाठकों को अबतक ज्ञात हो चुका होगा कि कुण्डली के फल-कथन में इन नौ ग्रहों की दो स्थितियाँ होती हैं। प्रथमतः ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति और दूसरा - ग्रहों की गोचर स्थिति। इन स्थितियों पर विचार करके ही फल कथन किया जाता है जो अधिक प्रामाणिक सिद्ध हो सकता है। यह कहा गया है कि कुछ ग्रह शुभ और कुछ ग्रह अशुभ (जिन्हें पापी या क्रूर ग्रह भी कहते हैं)

हैं) हैं। शनि को पापी (क्रूर) ग्रह माना गया है। शनि के सम्बंध में लोगों की अवधारणा समाज में भी अशुभ का सूचक है। लोग शनि के प्रकोप से अक्सर भयभीत रहते हैं और शनि की साढ़ेसाती तो जगत् प्रसिद्ध है जो लोगों को पूरे साढ़ेसात वर्षों तक उनके जीवन में होने वाले दुःख, हानि और मृत्यु-तुल्य कष्ट की आशंका से भयभीत किये रहता है। इस निबंध का उद्देश्य पाठकों तक शनि के स्वरूप, प्रकृति एवम् कार्य-क्षमता से परिचित करना है अन्यथा शनि के स्वभाव से अपरिचित रहकर शनिदेव के सम्बंध में भ्रामक विचार रखना ज्योतिष-शास्त्र के साथ न्यायपूर्ण नहीं माना जा सकता है।

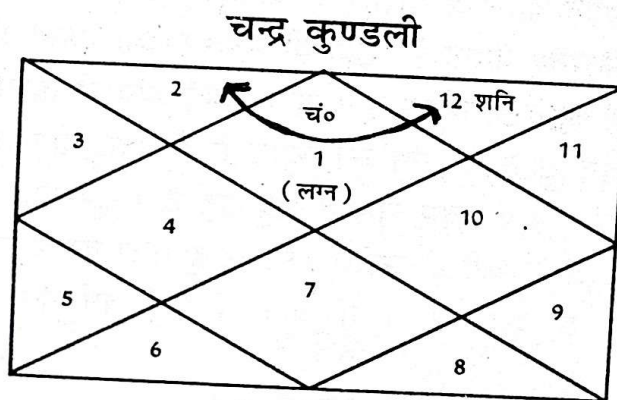
यह सत्य है कि शनि क्रूर ग्रह है। पापी है। अंग्रेजी में इसे सैटर्न (Saturn) अरबी में जौहल, फारसी में केदबान और संस्कृत में शनैःश्चर व सूर्यपुत्र कहते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार एक आख्यान मिलता है कि जब सूर्य बूढ़े हो गये तब देवताओं ने उनसे विवाह करने का प्रस्ताव रखा और वाद-विवाद के बाद जब सूर्य विवाह के लिए राजी हो गये तब देवताओं ने कहा कि पृथ्वी पर छाया नाम की एक रूपवती कन्या है जिसके साथ विवाह किया जाय। छाया एवम् सूर्य की शादी सम्पन्न हो गई और कालान्तर में छाया ने एक पुत्र (शनि) को जन्म दिया जो अति कुरूप था - काला-कलूटा, लँगड़ा, क्रूर नेत्र एवम् रूखे केश। इस कुरूप बालक को देखकर सूर्य बहुत दुःखी हुए और उसे आकाश से पृथ्वी पर फेंक दिया। पृथ्वी पर शनि का यह अवतरण दुःख, शंका, कष्ट और हानि का सूचक बन गया।

कथा यह भी है कि शनि देव ने शंकर भगवान की उपासना की और उनकी तपस्या से प्रसन्न भोलेनाथ ने वरदान दिया कि नौ ग्रहों में तुम्हारा जो पूज्य स्थान होगा वह अन्य ग्रहों का नहीं होगा। जिन व्यक्तियों के शरीर में तुम्हारा विशेष अनुकूल अंश होगा, वही भौतिक रूप से सम्पन्न होंगे और चराचर में तुम्हारा ही सम्प्रभुत्व परिलक्षित होगा। जहाँ-जहाँ तुम्हारीवक्र दृष्टि होगी उनका सर्वनाश होगा। तुम्हारा स्वभाव तामसी होगा। अभी तक सतयुग, त्रेता और द्वापर इन तीनों युगों में सत्य व सतोगुण तथा विद्वानों, गुरुजनों की उपासना एवम् सम्मान होता रहा है किन्तु कलियुग में तुम्हारी एवम् धातु की पूजा होगी।

ज्योतिष-शास्त्र का यह ग्रह शनि नपुंसक लिंगी, तामस स्वभाव का स्वामी है। इसका अधिकार पैरों पर होता है। यह मकर एवम् कुम्भ राशियों का स्वामी है। शनि के अपने नक्षत्र हैं - पुष्य, अनुराधा और उत्तर-भाद्र पद। यह तुला राशि में उच्च और मेष राशि में नीच का होता है। वृष, मिथुन राशियाँ शनि की मित्र राशियाँ हैं। शनि की शत्रु राशि है - कर्क, वृश्चिक तथा सिंह। शनि जब बुध के साथ होता है तब यह सात्विक आचरण करता है, शुक्र के साथ राजसी किन्तु सूर्य एवं चन्द्रमा के साथ जब शनि होता है तब शत्रुता पूर्ण आचरण करता है। शनि अपने भाव से तीसरे, सातवें और दसवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। वृष व तुला लग्न की कुण्डली में शनि योगकारक ग्रह हैं। शुक्र और बुध शनि के मित्र हैं जबकि मंगल, सूर्य एवम् चन्द्रमा शत्रु ग्रह हैं। वृहस्पति एवम् शनि में न मित्रता है न शत्रुता यानी सम भाव है। शनि पृथ्वी से करीब 85 करोड़ मील दूर है जिसका व्यास 2,50,000 मील है। शनि को एक राशि से दूसरी राशि में जाने में ढाई वर्ष का समय लगता है। गोचरवश

परिभ्रमण करते हुए शनि जब चन्द्र लग्न की कुण्डली से बारहवें भाव (द्वादशभाव) में पहुँचता है तो इस स्थिति को ज्योतिष शास्त्र में साढ़ेसाती की संज्ञा दी गई है। शनिदेव का चन्द्रलग्न कुण्डली से द्वादश भाव में पहुँचना साढ़ेसाती का प्रारंभ है। यह तो ज्ञात है कि कुण्डली के प्रत्येक भाव में एक-एक राशि होती है अतः द्वादश भाव में जो राशि है (चन्द्र लग्न कुण्डली से) उसमें शनि ढाई वर्ष तक रहता है क्योंकि शनि की एक राशि में टिके रहने की वही अवधि है। $2\frac{1}{2}$ वर्ष समाप्त होते-होते शनि द्वादश भाव से लग्न भाव (प्रथम भाव) में और उसके ढाई वर्ष बाद प्रथम भाव से द्वितीय भाव में पहुँचता है। शनि का चन्द्र लग्न कुण्डली से द्वादश भाव में पहुँचना और परिभ्रमण करते हुए द्वादश से प्रथम भाव में और पुनः प्रथम भाव से द्वितीय भाव में और द्वितीय भाव से तृतीय भाव में पहुँचने में ढाई+ढाई+ढाई कुल साढ़े सात वर्षों का समय लगता है जिसे ज्योतिष की भाषा में साढ़ेसाती कहते हैं।

ऊपर कहा गया है कि शनि एक राशि में ढाई वर्ष तक टिके रहते हैं। शनि या अन्य सभी ग्रह गतिशील हैं। अतः यह कहना कि ढाई वर्ष तक शनि एक राशि में टिके रहते हैं, पाठकों को भ्रमित कर सकता है। यहाँ टिके रहने का अभिप्राय यह दर्शाना था कि एक राशि जो 30° (अंश) का है जिसमें शनि जिस काल विशेष में प्रवेश करते हैं उन्हें अपनी गति से पूरे 30 अंश यानी एक राशि को पार करने में ढाई वर्ष का समय लगता है। फलतः शनि उस राशि विशेष में अपने प्रवेश के समय से लेकर उस राशि से आगे की राशि में प्रवेश करने तक टिके रहते हैं किन्तु इस पूर्ण ढाई वर्ष की अवधि में वे अपनी गतिशीलता बनाये रखते हैं। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि 12 राशियाँ 27 नक्षत्रों के समूह में टंगे हैं यानी सवा दो नक्षत्र के समूह में एक-एक राशियाँ कुल 27 नक्षत्रों के बीच हैं जो आकाश में स्थिर हैं। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस प्रकार सवा दो नक्षत्र के कुल नौ चरण होते हैं। अतः शनि या अन्य ग्रह जब कभी भी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं तब न केवल वे एक राशि को पार करते हैं बल्कि उसके साथ-साथ वे सवा दो नक्षत्रों के मानक चरण 'नौ' चरणों को भी पार करते हैं। इस प्रकार शनि या अन्य ग्रह जब राशि परिवर्तन करते हैं तो उन्हें नक्षत्रों में से भी गुजरना ही पड़ता है और इन्हीं राशियों-नक्षत्रों में से होकर गुजरने के कारण ग्रह अपने स्वभाव एवम् बलाबल के अनुसार राशि विशेष/नक्षत्र विशेष के साथ उनके आपसी सम्बन्ध या ताल-मेल के अनुसार फलदायक होते रहते हैं।



ऊपर की चन्द्र लग्न कुण्डली के प्रथम भाव में संख्या (1) है जो मेष राशि का सूचक है। प्रथम भाव के दोनों ओर बायें और दायें भाव जो क्रमशः द्वादश भाव द्वितीय भाव है उनमें 12 का अंक मीन राशि और 2 का अंक वृष राशि का सूचक है। शनि जब परिभ्रमण करते हुए मीन राशि (12) यानी द्वादश भाव में पहुँचते हैं, तब मेष राशि वालों की साढ़ेसाती प्रारम्भ हो जाती है। अब शनि को मीन राशि (द्वादश भाव) से निकलकर प्रथम भाव (लग्न भाव) यानी मेष राशि में जाने में ढाई वर्ष उसी प्रकार मेष राशि से निकलकर वृष राशि (द्वितीय भाव) में जाने में जाने में ढाई वर्ष और पुनः वृष राशि से निकलकर मिथुन राशि (तृतीय भाव) में जाने में जाने में ढाई वर्ष और पुनः वृष वर्षों का समय मेष राशि वालों को शनि का साढ़ेसाती कहा जाता है। अन्य राशियों की साढ़ेसाती इसी प्रकार समझी जा सकती है। मेष राशि वालों को यह साढ़ेसाती 16-2-1996 जिस तिथि को शनि मीन राशि में प्रवेश किये थे, साढ़ेसाती का प्रारम्भ हुआ था जो इस वर्ष 21 जुलाई, 2002 को मिथुन राशि में शनि के प्रवेश हो जाने के कारण मेष राशि वालों के साढ़ेसाती का अन्त हो गया। गणना करने से स्पष्ट होगा कि 16-2-1996 से 21-7-2002 की अवधि पूर्ण साढ़ेसात वर्ष नहीं होती है। इसका कारण यह है कि शनि की प्रत्येक राशि में भ्रमणकाल ढाई वर्ष निर्धारित है वह शनि की सामान्य गति पर आधारित है। किन्तु कभी-कभी ग्रह अपनी सामान्य गति से तेज गति में भ्रमण करने लगते हैं जिसे ज्योतिष शास्त्र की भाषा में मार्गी कहा जाता है फलतः एक राशि से दूसरी राशि में उनकी निश्चित अवधि जो सामान्य गतिशीलता पर आधारित है घट जाती है। यही कारण है कि वर्ष 1996 से 2002 के बीच कुछ अवधि में शनि के मार्गी होने के कारण पूरे साढ़ेसात वर्ष से कुछ कम समय में ही तीनों राशियों को पार कर लिया गया। इसके विपरीत जब ग्रह वक्री होते हैं तब सामान्य निर्धारित समयावधि से कुछ अधिक समय में वे राशि परिवर्तन करते हैं। अतः जब शनि वक्री होंगे तब उन्हें एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने में ढाई वर्ष से कुछ अधिक समय लग जाता है।

सामान्यतः शनि की साढ़ेसाती अशुभ और कष्टप्रद समझी जाती है। परन्तु पूर्ण साढ़े सात वर्ष एक जैसे व्यतीत नहीं होते हैं। ज्योतिष शास्त्र में शनि के अशुभ फल का कारण यह माना गया है कि जब जन्म राशि से शनि द्वादश भाव में होता है, तब वह अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वितीय भाव जो धन, कुटुम्ब, दुर्घटना का स्थान है, उसे देखता है। शनि क्रूर ग्रह है और उसकी दृष्टि जिन भावों पर पड़ती है या शनि जिन भावों में स्वयं अधिष्ठित रहता है या जो भाव शनि के उपर्युक्त दोनों प्रभावित भावों के बीच में अवस्थित है वह भाव धूमिल हो जाता है। फलतः उन सभी तीनों भावों के फल को प्रभावित कर सकता है। यदि कुण्डली में जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति या ग्रह दशा-अर्न्तदशा उन भावों के अनुकूल नहीं होगी तो अशुभ फल की प्राप्ति शनि की साढ़ेसाती में प्रायः निश्चित समझना चाहिए। उदाहरण कुण्डली में शनि का द्वादश भाव में पहुँचना जो व्यय और हानि का सूचक है, द्वितीय भाव को पूर्ण दृष्टि (तृतीय दृष्टि) से देखना जो धन, कुटुम्ब का सूचक है, षष्ठ भाव को सप्तम पूर्ण दृष्टि से देखना जो रोग, शत्रु और ऋण का सूचक है तथा नवम भाव को पूर्ण दृष्टि (दशम दृष्टि) से देखना जो ज्ञेय, भाग्य का सूचक है तथा लग्न भाव (प्रथम भाव) के दोनों ओर के भाव यानी द्वादश एवम् द्वितीय भाव को अपह्नी स्थिति एवम् दृष्टि से पापाक्रांत करना लग्न भाव को (जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व का सूचक

है) भी दूषित कर देता है। अब देखा जाय कि एक अकेला शनि व्यक्ति के धन, कुदृश्य, स्वास्थ्य, रोग, शत्रु और ऋण जैसे महत्वपूर्ण तथ्यों को अपनी उपस्थिति एवम् दृष्टि के कारण करता है तब व्यक्ति विशेष को शनि के इस प्रकोप से भयभीत होना स्वभाविक ही है। शनि की स्थिति के अनुसार आयु, मृत्यु, चोरी, द्रव्यहानि, कारावास, मुकदमा, फाँसी शत्रुता, नौकरी का छूटना, जन्म स्थान से दूर जाना स्थानान्तरण आदि कार्यों/बातों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। किन्तु शनि के उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त जहाँ केवल अशुभ बातों की ही चर्चा की गई है, बहुत कुछ शुभ फल भी प्राप्त होते हैं, और यह सत्य नहीं है कि शनि सर्वदा दुःख, हानि और कष्ट का कारण है। शनि जब जन्म कुण्डली में अच्छे प्रभाव में बलवान होकर स्थित रहता है तब इसके अतीव शुभ फल भी प्राप्त होते हैं जो व्यक्ति को उसके जीवन में चरमोत्कर्ष पर सहज ही पहुँचा देते हैं।

अतः शनि के सम्बंध में यह अवधारणा कि शनि का फल या शनि की साढ़ेसाती का फल सदैव बुरा ही होगा, सही नहीं है। एक उदाहरण के साथ यहाँ शनि की साढ़ेसाती से सम्बंधित विवेचन को समझाना चाहूँगा जो यह स्पष्ट करता है कि शनि साढ़ेसाती अवधि में एक राशि से दूसरी राशि में गुजरते हुए सदैव अशुभ फल देगा यह सम्भव नहीं है। उदाहरण कुण्डली में जो मेष राशि का है जब शनि मीन राशि में प्रवेश करता है तब शनि की साढ़ेसाती प्रारम्भ हुई। मीन राशि में सवा दो नक्षत्र के नौ चरण हैं जिनमें पूर्वाभाद्रपद का एक चरण, उत्तराभाद्र का चार चरण (यानी पूरा उत्तराभाद्र पद नक्षत्र) और रेवती नक्षत्र का चार चरण (यानी पूरा रेवती नक्षत्र) पड़ता है। पूर्वाभाद्र पद के स्वामी वृहस्पति हैं जो शनि के साथ समभाव रखते हैं फलतः इस नक्षत्र से गुजरते समय शनि जातक को कष्ट देंगे यह आवश्यक नहीं है। यदि कष्ट देंगे भी तो उसकी मात्रा न्यून होगी। उत्तराभाद्रपद के स्वामी बुध के साथ शनि की मित्रता के कारण जब शनि उस नक्षत्र से गुजरेंगे तो उक्त नक्षत्र जो शनि का स्वयं का नक्षत्र है और उसके स्वामी बुध जो शनि के मित्र भी हैं इस स्थिति में शनि कभी बुरा फल नहीं देंगे। अतः यह स्पष्ट है कि मेष राशि वालों के लिए द्वादश भाव यानी मीन राशि में आया हुआ शनि हानिकारक नहीं होगा। हाँ, शनि भले ही अपने स्वाभाविक गुण-धर्म के कारण छोटी-मोटी बाधाएँ या तकलीफ या व्यय अल्पावधि तक खड़ा कर सकता है।

साढ़ेसाती दीर्घजीवी मनुष्य के जीवन में अधिक से अधिक तीन बार आती है। एक साढ़ेसाती से दूसरे साढ़ेसाती आने में करीब तीस वर्ष का समय लगता है। यदि यह मान भी लिया जाय कि बालक के जन्म समय से ही साढ़ेसाती प्रारम्भ हुई और वह बालक नब्बे वर्ष की उम्र अगर पार करता है तब वह अपने जीवनकाल में तीन साढ़े साती को झेलेगा। चौथी साढ़ेसाती आने में 120 वर्ष का समय लगेगा और ऐसा सम्भव नहीं दीखता है क्योंकि 120 वर्ष की आयु तक जीवित रहना असम्भव नहीं तो अति दुर्लभ तो अवश्य ही प्रतीत होता है। हाँ जीवन में दो साढ़ेसाती का आना लगभग तय है किन्तु पाठक शनि की साढ़ेसाती से उदास मत हों क्योंकि ऊपर के कथन से स्पष्ट है कि शनि केवल अशुभ का ही सूचक नहीं है बल्कि उसका फल जन्म कुण्डली में उसकी अन्य ग्रहों की स्थिति एवम् शनि की स्वयं की स्थिति एवम् बलाबल पर भी निर्भर है जो व्यक्ति को उच्चासन पर प्रतिष्ठित कर सकता है।

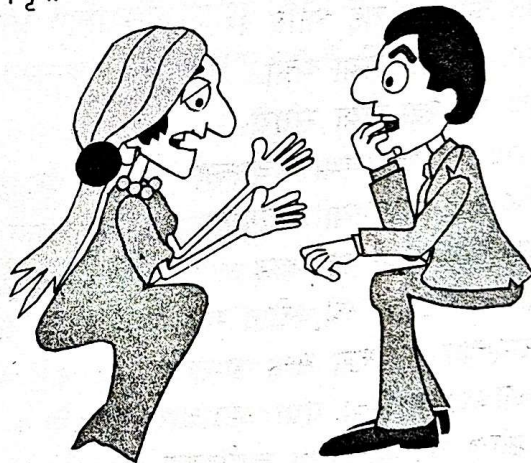


उल्लू को खा गया खटास

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर', व०ले०, हिन्दी कक्ष

प्रातःकाल,
पत्नी अखबार पढ़ रही थीं ।
मैं लेटा हुआ था विचारमग्न
इतने में पत्नी ने किया ध्यानभंग ।
बोलीं.....
अजी, सुनते हो
मैंने कहा, क्या?
पत्नी बोलीं.....
उल्लू को खा गया खटास ।
मैंने कहा क्यों हो तुम उदास ?
उल्लू तो खाने के लिए होता ही है ।
देख नहीं रही हो.....
समस्त विश्व को उल्लू का गोश्त खिलाया जा रहा है,
उल्लू का पट्टा बनाया जा रहा है ।
खाने-खिलाने का सिलसिला तो चलता ही रहता है,
इस तरह का घटनाक्रम तो होता ही रहता है ।
देखो, नीति को खा गई राजनीति
प्रीति को खा गई भीति ।
चारा को खा गया मंत्री
वर्दी को खा गया संतरी
संसद को खा गया उचक्का
मंत्री को खा गया तहलका
धरती को खा गई बाढ़
हरे-भरे खेतों को लील गया सुखाढ़ ।
सदाचार को खा गया भ्रष्टाचार
आचार को खा गया अनाचार
शील को खा गया व्यभिचार
चारों ओर भूख का ही समाचार
मचा हुआ है--हाहाकार, हाहाकार, हाहाकार !!!
अब कहाँ सुनाई पड़ता है प्रेम का मधुर राग,

चतुर्दिक खटराग -ही - खटराग ।
 अब, खेला न जाता प्रणय का फाग
 लग चुकी है घृणा, विद्वेश की आग ।
 सदाचारिता का कर भक्षण
 घृणा, विद्वेष कूटनीति का ओढ़ कफन
 मानवता को कर दिया दफन
 नतीजा, मनुज का मनुज के हाथों मरण ।
 देख रही हो न, मानव की जबर्दस्त बुभुक्षा
 लूट, नोंच खसोट की प्रबल इच्छा
 ऐसे में कैसे बची रहेगी शुभेच्छा
 कैसे होगी मानवता की रक्षा ?
 सुन रही हो न, मानवता का करुण क्रन्दन
 देख रही हो न, दानवता का वीभत्स नर्तन
 नृशंस हत्याएँ करता आतंकी संगठन
 अपहृत विमान से करता आक्रमण
 धू-धू कर जलता न्यूयार्क औ' वाशिंगटन ।
 क्या ऐसे में होगा मानवता का निर्वहन ?
 कराहती मानवता हो निर्विद्ध
 जीवित नोंच रहा जिसे गिद्ध
 खाने की प्रबल इच्छा स्वयं सिद्ध
 खानेवाले को कैसे किया जा सकता निवृत्त ?
 एक समय था
 जब हमने खाने को न दिया
 कोई महत्व खास
 बापू ने कर उपवास
 जगायी हममें मानव-सेवा की प्यास
 ऐसा हम आज भी कर सकते काश !
 जहाँ मानवता का निर्वासन
 दानवता का दुःशासन
 निविष्ट भक्षण का आसन
 पूजे जाते क्रूर दशानन
 त्राहिमाम, त्राहिमाम करती जनता जनार्दन
 वहाँ तुम क्यों हो खिन्न और उदास
 यदि उल्लू को खा गया खटास ।



स्वप्न क्या है ?

श्री शिवदयाल सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

जिन बातों से हम अद्यतन चिन्तित रहते हैं "वे ही बातें स्वप्न में भी आया करती हैं"। जो बातें अद्यतन होने के साथ-साथ भयकारी भी हैं वही स्वप्न के बनने में मुख्य भूमिका अदा करती हैं। इसके साथ-साथ कुछ ऐसी भी बातें स्वप्न में आती हैं जिनसे हम असन्तुष्ट हैं अथवा उस बात को (कब को) सफलता पूर्वक कर पायेंगे कि नहीं इसमें सन्देह रहता है।

मैंने एक दिन कुछ ऐसा काम किया जिससे कुछ छोटे पद के कर्मचारी मुझसे असन्तुष्ट हो गए। हालाँकि उन सबों की सोच गलत थी। मुझसे गलती नहीं होती, ऐसी बात नहीं है। यथासंभव मेरी कोशिश यह रहती है कि मैं सत्य का पालन करूँ। मुझसे गलतियाँ कम हों। मैं किसी को इच्छापूर्वक हानि पहुँचाना नहीं चाहता। यदि मेरे उच्चाधिकारियों द्वारा मुझे कुछ काम सौंपा जाता है और उस काम को करने के क्रम में किसी को कुछ तकलीफ होती है तो क्या मैं काम करना ही छोड़ दूँ ? नहीं, कर्म विमुख होना ईश्वर विमुख होना है। मण्डीजी के शब्दों में, "सत्य के साधक को सावधान रहने की आवश्यकता होती है"। कर्मचारियों को रूष्ट होना उस दिन स्वप्न में आया।

स्वप्न में पुरानी बातें जो बहुत ही सनसनीखेज रही हों - वे भी आती हैं। जैसे- निर्दोष पर की गई पुलिस की धड़-पकड़। दोषियों का समूह निर्दोष को धमकी दे रहा हो, मार रहा हो अथवा मारने-पीटने की कोशिश कर रहा हो। इन सब बातों के साथ-साथ कुछ साधारण अद्यतन घटनाएँ-जिनसे कोई भय नहीं, वह भी स्वप्न में आ जाया करती हैं। जैसे हवाई जहाज, जहाजों का समूह, स्त्रियों की याद, जिसका हम उपयोग करना चाहते हैं, लेकिन सामने की बाधाओं को टालते हुए वहाँ तक पहुँचना कठिन है, असम्भव-सा है।

स्वप्न गाढ़ी निद्रा खत्म हो जाने के बाद ही आता है जब हम करवटें बदल रहे होते हैं। स्वप्न बीच-बीच में टूट-टूट कर भी आता है। यानी स्वप्न देखते-देखते हम कभी-कभी कुछ जागने भी लगते हैं, चेतन अवस्था में आने लगते हैं, नींद खुलने लगती है और स्वप्न समाप्त हो जाता है। पुनः सोने पर उसी स्वप्न की पुनरावृत्ति होने लगती है।

ऐसा लगता है कि भय की सारी बातें, असन्तोष की सारी बातें कहीं एक जगह भरी पड़ी हैं और उनमें एक और भय को प्रवेश पाने के लिए, एक और असन्तुष्टि को शामिल होने के लिए स्वप्न रूपी दरवाजा खुलता है जिसका आभास मनुष्य को सोयी हुई अवस्था में स्वप्न के रूप में होता है।

स्वप्न न आवे इसके लिए भयपूर्ण बातचीत का त्याग करना चाहिए। जीवन संघर्षमय है। भय से पूर्णतया तो हम विलग नहीं हो सकते पर बचकर रहा जा सकता है। भय के फलीभूत होने से बचा जा सकता है। जो तू नहीं कर पाया वह भगवान करेगा - इस सिद्धान्त पर विश्वास रखें। किसी के अरमानों को ठेस पहुँचाने की कोशिश न करें। कोई भी व्यक्ति क्रोधित तब होता है जब उसकी इच्छाओं को ठेस पहुँचती है, उसके अरमानों को धक्का पहुँचता है। इच्छाएँ अच्छी या बुरी दोनों तरह की हो सकती हैं। दूसरों का आप पर आक्रोश भी तो भय के रूप में ही दिखता है। वही भय स्वप्न में भी परिवर्तित होने लगता है।



ताजमहल और हमारा देश

श्री विजय प्रकाश

सुपुत्र-श्री हृदयानन्द प्रसाद

लेखा अधिकारी

पत्थर पर है लिखी कविता
पीछे बहती जिसके सरिता
देख जिसे सब होते कायल
है वो हम सब का ताजमहल ।
मोहब्बत का है यह प्रतीक
शाहजहाँ ने याद दिलाया अतीत ।
कितना सुखी, सम्पन्न था भारत
तभी तो बनी यह ऐतिहासिक इमारत ।
चारों तरफ खुशी ही खुशी
कहीं होली तो कहीं सेवई ।
सारी दुनिया की थी भारत पर नजर,
मगर फिरंगियों की लग गई बुरी नजर,
सबसे कहा हमारा मकसद है व्यापार बढ़ाना
पर असली मकसद तो था लूट-पाट मचाना,
और सत्ता पर अधिकार जमाना ।
हो गये फिरंगी सत्ता पर काबिज,
देकर झाँसा हो गये राजाओं के मुहाफिज ।
मूर्ख राजाओं को मिला उनकी करनी का फल
गद्दी छिन गई, ठाठ-बाट गया, रहा न कोई कल ।
ईश्वर सब कुछ देख रहा था,
मौन खड़ा कुछ सोच रहा था ।
क्या यही है भारत का वर्तमान ?
जो कभी था दुनिया का नायक महान ।



पर ईश्वर कब तक खड़े रहते मौन
 कब तक देखते रहते फिरंगियों का ये उत्पात
 क्रोध में आकर दे दिया उनको यह व्याघात
 कि एक ऐसा मानव आएगा जो तुम्हें हरायेगा,
 हाथ में जिसके न होंगे तीर और तलवार
 फिर भी तुम सब उसके सामने रहोगे लाचार
 पर उसके लिए कौन करेगा पहल
 ये सब कुछ सोच रहा था ताजमहल ।
 तभी ऊपर से आवाज ये आई,
 चिन्ता मत करो तुम हे भाई ।
 हो गई है इसकी पहल,
 जन्म ले लिया है बापू ने कल ।
 नयी सदी का आगाज हुआ है,
 जिसमें अंग्रेजों का अंजाम छिपा है ।
 बापू ने दिलाई आजादी हमें बिना तीर तलवार की
 पर जालिम फिरंगी खींच गये एक लकीर
 अपनी हार की ।
 मजहब के नाम पर दे दिया हमें ऐसा जख्म
 जिसका आज तक नहीं मिला मरहम
 जब भी खोजने निकले हम इसका मरहम
 मरहम की जगह मिल गये और नये जख्म
 किस-किस का हम नाम लें और कौन-सी दे मिसाल
 सन '48 को याद करो और करो याद 65
 का वह साल
 'सन '71' और सन '99' में भी तो हुआ था
 यही हाल,
 आखिर कब तक चलेगी ये नफरत की तलवार,
 किसने है यह मजहब की आग लगाई



जो दो राष्ट्रों के बीच खोद रहा है खाई ।
 जो भी हो, है तो वह हम सबका दुश्मन
 तभी तो आज तक नहीं हुआ
 देश में चैन-अमन ।
 पर क्यों नहीं यह बात हमें समझ में आती
 कि हम भी थे कभी एक ही देश की माटी
 क्या एक लकीर, की इतनी मजाल
 जो दो देशों में ला दे इतना भूचाल
 अब तो सब करते हैं, शांति और अमन
 की फरियाद ।
 क्योंकि सबके दिलों में ह बँटवारे की कड़वी याद ।
 एक बार फिर हम सब कर ईश्वर को याद
 करें कुछ ऐसा कमाल
 कि हो जाये सब जगह अमन और चैन बहाल ।
 सब के दिलों में प्यार बढ़े और बढ़े भाईचारा
 इसके लिए हम याद रखें यही एक नारा
 कि सभी तो हैं एक ही पिता की संतान
 तो फिर क्या हुआ अगर कोई राम है
 तो कोई रहमान ।
 क्या हुआ कोई सिख है तो कोई ईसाई
 वह भी तो है एक इन्सान ही भाई ।
 एक बार फिर करें हम सब आपस में प्यार
 तभी तो खुलेगा हमारी सफलता का द्वार ।
 यही तो है ताजमहल का भी संदेश,
 कि हो कोई भी जाति, धर्म, और देश,
 रहें सभी प्यार से, मिटे सबका क्लेश ।



प्रशासन प्रबंधन की नई कुँजी ई-गवर्नेन्स

श्री रणजीत कुमार सिंह

सहायक लेखा अधिकारी

सूचना प्रौद्योगिकी विज्ञान की वह शाखा है जो सूचनाओं के आदान-प्रदान को आसान बनाती है। इस व्यवस्था की प्राचीनतम तकनीक टेलीग्राफ थी और आज इंटरनेट है। इंटरनेट विश्व में सभी समुदायों से सम्बद्ध मामलों पर विचार-विमर्श के मंच के रूप में सारी दुनिया में सूचना का प्रसारक बन गया है। सूचना के क्षेत्र में क्रान्ति पैदा हुई है, जिससे ग्लोबल गाँव की संकल्पना मूर्त रूप ले चुकी है। इसके बहुआयामी उपयोग का लाभ, विश्व के तीन देशों को छोड़कर (अफगानिस्तान, मयन्मार एवं उत्तरी कोरिया) सभी उठा रहे हैं। आज इस दौर में जहाँ अमेरिका में कम्प्यूटर की सहायता से दुनिया के एक कोने में उपलब्ध डाक्टर दूसरे छोर पर उपलब्ध मरीज का आपरेशन रोबोटिक तकनीक से करने की तैयारी में जुटे हैं, वहीं भारत में प्रशासन प्रबंधन कम्प्यूटर से करने की तैयारी की जा रही है। भारत सरकार ने 18 अक्टूबर, 2000 के प्रभाव से सूचना तकनीक (आई०टी०) कानून लागू किया है जिससे स्पष्ट होता है कि इस देश में एक सशक्त सूचना क्षेत्र के निर्माण को गम्भीरता से लिया जा रहा है। साथ ही प्रशासन में इसकी भूमिका बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रानिक प्रशासन (ई-गवर्नेन्स) की संकल्पना भी तैयार की गई है, जिसे लागू करने के लिए सरकार दृढ़ निश्चय कर चुकी है।

ई-गवर्नेन्स अर्थात् सरकारी सेवाओं एवं सूचनाओं को आम जनता तक इलेक्ट्रानिक माध्यमों द्वारा पहुँचाना। इससे सूचना तकनीक से सुसज्जित सरकार जनता को बेहतर पारदर्शिता तथा सेवा सुनिश्चित करेगी। इसकी विशेषता यह है कि सरकारी सेवाओं एवं सूचनाओं की मुफ्त जानकारी जब चाहें तब प्राप्त करने की सुविधा होगी। इसे आकर्षक तथा प्रभावी बनाने के लिए 'स्मार्ट कार्ड' के परिचालन पर भी विचार किया जा रहा है, जिससे बिलों का भुगतान, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट आदि प्राप्त करना, सभी झमेलों से परे, आसान होगा। न लाइन में लगने की जरूरत, न इन्तजार और न ही दफ्तर, बाबू या दलालों का चक्कर। इलेक्ट्रानिक वातावरण में ऐसी व्यवस्था होने पर निश्चित रूप से जनता के अधिकारों का हनन नहीं होगा और वे अपने अधिकार तथा कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक होंगे।

भारत सरकार ने ई-गवर्नेन्स की चुनौती भरी संकल्पना को व्यवहार में लाने के लिए कई कदम उठाए हैं। सूचना तकनीक मंत्रालय द्वारा ई-गवर्नेन्स के लिए एक केन्द्र का गठन किया गया है जो इसके प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन पर नियंत्रण रखेगा। योजना आयोग ने भी दसवीं पंचवर्षीय योजना 2002-2007 में ई-गवर्नेन्स सम्बन्धित परियोजनाओं के लिए तीन हजार करोड़ रुपये के प्रावधान की अनुशंसा की है। साथ ही इसकी कार्यकारी समिति ने सरकार तथा जनता के बीच सीधा सम्पर्क स्थापित

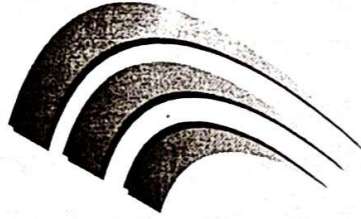
करने के लिए एक भारतीय पोर्टल स्थापित करने का भी प्रस्ताव दिया है, जिसमें एक ही माध्यम से सरकार द्वारा संचालित कई उपयोगी पहलुओं को जनता जान सके और समझ सकें।

ई-गवर्नेन्स को व्यावहारिक रूप में सफल बनाने के लिए दो स्तरों पर जागरूकता की है - पहला सरकारी तन्त्र के स्तर पर और दूसरा उपभोक्ताओं के स्तर पर। सरकार ने सूचना को आम जनता के दरवाजों तक ले जाने के लिए सामुदायिक केन्द्रों की महत्वाकांक्षी परियोजना की है। साथ ही ऐसे विभाग जिनसे आम जनता को अधिक लाभ मिलते हैं और जिनसे सम्पर्क है, उन्हें शीघ्र ही कम्प्यूटरीकृत करने का निर्देश दिया गया है। इनमें डाक, दूरसंचार विभागों का तो कम्प्यूटरीकरण बड़े पैमाने पर हुआ है, अन्य विभाग भी क्रमवार कम्प्यूटरीकृत रहे हैं। सभी मंत्रालयों एवं विभागों को इन्टरनेट से जोड़ने का निर्णय लिया गया है ताकि सभी आँकड़ों, सूचनाओं एवं संदेशों की अद्यतन जानकारी एक ही खिड़की में उपलब्ध हो सके। जागरूकता लाने के लिए सूचना तकनीक के प्रसार की कई नीतियाँ बनाई गयीं हैं और उन्हें लागू भी किया जा रहा है। राजस्थान के न्याल गाँव में 'जननिधि' सूचना कियोस्क, एक क्षेत्र में सरकार द्वारा स्थापित किया गया पहला केन्द्र है जिसके द्वारा लोगों को स्वास्थ्य, कृषि बिजली के संबंध में आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायी जा रही है। मध्य प्रदेश के धर इक्कतीस गाँव आपस में इन्टरनेट नेटवर्क से जुड़े हुए हैं। यह सरकार का ज्ञानदूत कार्यक्रम ग्रामीणों को खेती के तरीकों, नीलामी केन्द्रों द्वारा कृषि उत्पन्न चीजों का भाव, भूमि संबंधित आवेदन का आन लाइन रजिस्ट्रेशन, लोक शिकायत ई-मेल आदि की सुविधा प्रदान कर रहा है। ही हर तरह की नवीनतम सूचनाएँ जैसे-सरकार द्वारा अनुदान, सामाजिक सुरक्षा, पेंशन, ग्रामीण योजनाओं इत्यादि की जानकारी भी जब चाहें तब ग्रामवासी प्राप्त कर रहे हैं और वैभवपूर्ण रहते हुए गर्व अनुभव कर रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश में तो कम्प्यूटरीकृत प्रशासन व्यवस्था फैले से है, अब हैदराबाद को साइबर सिटी के रूप में विकसित किया गया है।

परन्तु, ऐसी भी धारणा है कि आज के भ्रष्टाचार और घोटालों के दौर में जहाँ हाथ प्रशासन माननीय उच्च न्यायालय के आदेश को भी लागू करने में सक्षम नहीं है, वहाँ कम्प्यूटर की सहाय प्रशासन प्रबन्धन कहाँ तक सार्थक होगा? चूँकि एक अरब से अधिक आबादी वाले इस देश में आधे से अधिक लोग निरक्षर हैं तथा मौलिक आवश्यकताओं के लिए तरस रहे हैं, वहाँ कम्प्यूटर पहुँच कुछ लोगों के लिए स्टेटस सिम्बल के रूप में ही माना जाता है। यह उच्च मध्यमवर्गीय बोलने वालों के पास तक ही सीमित होकर रह गया है। आम आदमी के कम्प्यूटर खरीदने को छोड़ दीजिए, इसके इस्तेमाल से भी वह परिचित नहीं है और उसके लिए अब तक यह एक हवा है। यह भी तर्क दिया जाता है कि आन्ध्र प्रदेश की ई-गवर्नेन्स भ्रष्टाचार रोकने में कारगर नहीं है।

भले ही वहाँ की सरकार अनुदान और विदेशी कर्ज लेने में सक्षम हो पायी है, परन्तु कर्ज की अर्थव्यवस्था वहाँ की जनता को ही ढोना पड़ रहा है। आन्तरिक संसाधन बढ़ाने के मामले में कुछ खास नहीं हो पाया है और गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या में वृद्धि ही हुई है। सही कहें तो ई-गवर्नेंस का इस देश में लागू होना अधिकतर लोगों को हास्यास्पद ही लग रहा है।

जबकि वास्तविकता यह है कि आधुनिक युग में तकनीक क्रान्ति का असर लगभग हर क्षेत्र में पड़ा है। भले ही हम इसे भौतिक एवं मानसिक रूप में आयातित क्रान्ति मानें या वैध नियमन के अभाव में शंका की दृष्टि से देखें। यह तो हमें मानना ही होगा कि एक सशक्त सूचना क्षेत्र का निर्माण किसी सूचना प्रधान राष्ट्र की विशेषता है। अमेरिका और जापान की उपलब्धि देखते हुए, सुनियोजित तथा योजनाबद्ध तरीके से ई-गवर्नेंस से प्रशासन सम्भालने की तैयारी अब शुरू हो चुकी है। इलक्ट्रॉनिक प्रशासन सरकार एवं जनता के बीच निश्चित रूप से एक सुरक्षित, भरोसेमंद एवं नियंत्रित अन्तर्पृष्ठ उपलब्ध करा सकता है। आज मध्य प्रदेश के धार जिले के कुछ गाँव इसकी नींव बने हैं तो इमारत कल सारा देश होगा।



उपासना से ईश्वर की प्राप्ति

श्री दिलीप कुमार सिंह
लिपिक

"बन्दों गुरु पद कंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि ।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर ॥
धन्य-धन्य सतगुरु सुखद महिमा कही न जाय ।
जो कछु कहूँ तुम्हरी कृपा, मोतें कछु न वसाय ॥"

मानव जीवन के मार्ग दो हैं - (1) संसार का मार्ग जिसे 'प्रेय' कहा जाता है और (2) संसार

का मार्ग जिसे 'श्रेय' कहते हैं । (कठोपनिषद)

मानव मात्र 'प्रेय मार्ग' से संसार में सुख पाना चाहता है । वह संसार के पदार्थों को सत्यता के आकर्षण से आकर्षित होकर और उन्हें प्राप्त कर सुखी होना चाहता है । उनके अनित्य कारण उनसे प्राप्त सुख में तृप्ति नहीं होती, बल्कि तृष्णा ही बढ़ती जाती है । उनके अनित्य है । चंचलता के कारण अशान्ति बढ़ती है । जिससे मनुष्य अपने कर्तव्य-कर्म का निर्णय नहीं कर है और अकर्तव्य-कर्म कर बैठता है । फलतः वह दुख भोगता है । मन की चंचलता तथा अज्ञान कारण ही बुद्धि की निर्णय करने की शक्ति भी बहुत कम हो जाती है, जिससे मोह में पड़कर संसार चक्र की सत्यता को भूल जाता है और नाना प्रकार के भयंकर दुःखों को बारम्बार भोगता है । इस तरह मानव आजीवन दुःखी रहता है ।

संतों का कहना है कि अगर सुख पाना चाहते हो तो सत्य तत्व को ग्रहण करना होगा । एकमात्र परमात्मा है जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म है । वह अक्षय और शांतिमय सुख का भंडार है । वह अपने विराजमान है । फिर क्यों नहीं अपनी बहिर्मुखी दृष्टि को संसार की तरफ से फेर कर अंतर्मुखी जाए । इसलिए संत सदगुरु ईश्वर के एक नाम का जप तथा एक रूप का ध्यान करने कहते हैं । रूप का संग्रह ही संसार है जो हमारी दृष्टियों को बहिर्मुख करता है । प्रथम नाम (शब्द) में और रूप में खिंचाव होता है ।

अतः प्रथम वे नाम-जप तथा बाद में रूप ध्यान करना बताते हैं । अपनी इष्ट के सदगुरुओं तथा उनके कल्याण के लिए किये गये उनके त्याग आदि के स्मरण से साधक के अन्दर उनके प्रति सच्चे का उदय होता है । उनके नाम रूप का सहारा लेकर वह संसार के सभी नाम-रूपों से अपने

को हटाकर इष्ट के नाम-रूप में एकाग्र करने में सफल होता है, क्योंकि गुरु-प्रदत्त नाम (मंत्र) और रूप में बड़ी शक्ति होती है ।
यथा :-

मंत्र परम लघु जासु वस, विधि हरिहर सुर सर्व ।

महामत्त गजराज कहँ, बश कर अंकुश खर्व ॥ (मो० तुलसी दास जी)

“निहारो यारो गुरु मूरति की ओर ।

गुरु मूरति सूरति बिच निरखो, तब उर होत इंजोर ॥

छूटत कर्म तार सब टूटत, फूटत कठिन कठोर ।

शुभ अरू अशुभ कर्म ना लागै, जागि धरोगृह चोर ” ॥ (शिवनारायण स्वामी)

एक नाम-रूप में मन के टिकने पर नाम-रूपात्मक जगत से मन का अलगाव हो जाता है, मन को चैन मिलने लगता है । सूरत शुद्ध होने लगती है ।

“गुरु जाप मानस ध्यान मानस, कीजिए दृढ़ साधकर ।

इनका प्रथम अभ्यास कर, श्रुत शुद्ध करना चाहिये ॥” (महर्षि मेंहों पदावली)

इस तरह साधक सूरत को शुद्ध करके तीसरी क्रिया दृष्टियोग करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। यह क्रिया पूर्णतया दृष्टि-सिमटाव का साधन है । इससे दृष्टि की दोनों धारें अपने अन्दर एक जगह मिलती हैं, जिससे ज्योतिर्मय बिन्दु का उदय होता है । यहाँ मन शून्यगन हो जाता है । वास्तव में यही ध्यान है । यथा :-

“ध्यानं शून्यगतं मनः।” और “तेजो विन्दुः परख ध्यानं ।”

इससे हृदय की पूर्व संचित वासनाओं, का पापों का क्षय हो जाता है ।

यथा : “यदि शैल समं पापं विस्तीर्ण बहुयोजनम् ।

भिद्यते ध्यानयोगेन नान्यो भेदः कदाचनः ॥ (ध्यान विन्दु पनिषद्)

यदि पहाड़ के समान कई योजन तक फैला हुआ पाप हो, तो वह ध्यान योग से नष्ट हो जाएगा । वेद कहता है- “न अन्यो भेदः और कोई दूसरा उपाय नहीं है, यही एक उपाय है ।

बाह्य जगत में कोई तीरंदाज जब अपने शिकार को लक्ष्य कर तीर चलाता है तो शिकारी की दोनों आँखों की दृष्टिधारेँ सिमटकर एक हो जाती हैं । उसकी दृष्टि, शिकार और तीर का अग्र नोक जब एक सीध में होते हैं, तो शिकारी की साँस क्रिया बन्द हो जाती है, तभी तीर छूटने से शिकार मारा जाता है । यही क्रिया जब आँखें बन्द करके अपने अन्दर में साधक करता है तो दृष्टिधारेँ एक होते ही उसकी

श्वास क्रिया बन्द होती है और आगे वासना-रूपी शिकार मृत्यु यानी नाश की प्राप्ति हो जाती है।
 "चिरकालं हृदेकान्तव्योम संवेदनान्मुने ।
 अवासन मनोन्यानात् प्राणस्पन्दो निरुध्यते ॥" (शांडिल्योपनिषद्)

कपड़ा जब गंदा होता है तो उसे हमलोग सर्फ और पानी से साफ करते हैं, सोने, चाँदी का होता है तो इसे इसी ध्यान-साधना के द्वारा साफ किया जाता है। ठीक इसी तरह अंतः प्राण की क्रियाओं से यह कार्य नहीं हो सकता ।

यथा :

"अनेक यज्ञदाननि व्रतानिः नियमास्तथा ।

सुषुम्नाध्यान लेशस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥6॥ (योगशिखोपनिषद्)

चित्तान्तर्गतं दृष्टं तीर्थ स्नानैर्न शुद्ध्यति ।

शतशोऽपि जलैर्घौर्त सुराभाण्डमिवा शुचि 4(54) (जावाल दर्शनोपनिषद्)

इस साधना में जो सफल होता है, वही योगी होता है । योगी का वाह्य वेश बना लेने मात्र से योगी नहीं हो सकता ।

"एक दृष्टि करि सम सरि जाणै जोगी कहीअै सोई ।" (गुरुनानकदेव)

ऐसे योगी की आंतरिक शक्ति बहुत बढ़ जाती है । उन्हें अंतः प्रकाश की प्राप्ति हो जाती है, जिसे वह अज्ञान से ज्ञान की दशा में चला जाता है ।

इसे हमलोग लाउडस्पीकर के कार्यों से भी समझ सकते हैं । इसे बजाने के लिए पहले बैटरी चूट्टे लगाते हैं । इन चूट्टों में लगे तार एम्पलिफायर से जुड़े होते हैं । इनमें तार एक गरम होता है । जब एम्पलिफायर के बटन को हम नीचे दबाकर ऑन करते हैं तो ये दोनों तार सट जाते हैं और तत्क्षण इसमें प्रकाश हो जाता है । प्रकाश होते ही उसकी शक्ति बहुत गुणा बढ़ जाती है, किन्तु माइक की आवाज सौ गुणा से भी अधिक बढ़ जाती है । ठीक यही बात दृष्टियोग की क्रिया में होती है । हमारी आँखों की दोनों धाराओं में एक गर्म है और दूसरी ठंडी । अपने अन्दर इनके मिलने से ही प्रकाश का उदय हो जाता है । जिससे साधक के अज्ञान अंधकार से उत्पन्न षट् विकार मिट जाते हैं और प्रकाश में ज्ञान की वृद्धि हो जाती है जिससे उसे ज्ञान, विज्ञान, सुख, संतोष, विराग, विकल्प आदि सदगुणों की प्राप्ति हो जाती है ।

यथा :-

“जबते राम प्रताप खगेसा ।
उदित भययु अति प्रबल दिनेसा ।
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुँ लोका ।
बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह मन सोका ॥
जिन्हहिँ सोक ते कहहुँ बखानी ।
प्रथम अविद्या निसा निसानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ।
काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
विविध कर्म गुन काल सुभाऊ ।
यह चकोर सुख लहहिँ न काऊ ।
मत्सर मान मोह मद चोरा ॥
इन्ह कर हुनर न कबनिहु ओरा ॥
धरम तड़ाग ज्ञान विज्ञाना ।
ये पंकज बिकसे विधि नाना ॥
सुःख संतोष विराग विवेका ।
विगत सोक फोक अनेका ॥

दोहा : यह प्रताप रवि जाके, उर जब करई प्रकाश ।
पछिले बाढ़हि प्रथम जे, कहे ते पावहीं नास ॥

(राम चरित मानस, उत्तर काण्ड)

अग्नि चार प्रकार की होती है । प्रथम दावानल, जो बाह्य पदार्थों को जलाकर भस्म कर देती है। दूसरी बड़वानल, जो समुद्र के जल को मर्यादित रखती है । तीसरी जठरानल, जो हमारे खाये हुए भोजन को पचाती है । चौथी, योगानल, जो हमारे अन्तःकरण पर जमे विकार वासना को पिघलाकर बाहर कर देती है ठीक उसी तरह जिस तरह लकड़ी में लपेटी हुई लाह अग्नि के सम्मुख रखने से पिघलकर लकड़ी को छोड़कर बाहर गिर जाती है । इस प्रकार देखते हैं कि हर अग्नि का अलग-अलग कार्य है । एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकती । अतः योगाग्नि प्रकट करने के लिए एक मात्र यही साधना है जिससे हम वासना विकार रहित हो सकते हैं । इस साधना से दूर देखने की शक्ति भी बढ़ जाती है। पृथ्वी या पहाड़ के अन्दर कौन-से पदार्थ कहाँ हैं, उन्हें अन्तर-दृष्टि से देखा जा सकता है। इतना ही नहीं, सारे शरीर से चेतन - धारें - सिमटकर इन दोनों धारों के मिलन-स्थान आज्ञाचक्र के केन्द्रविन्दु पर आ जाती है, जिससे सारी इन्द्रियाँ निश्चेष्ट हो जाती हैं । साधक इन्द्रियाँ निग्रही हो जाता है और उनकी नवधा भक्ति की छठी भक्ति दमशीलता की साधना पूर्ण हो जाती है। बाइबिल में भी इस साधना का

वर्णन है, देखें :

The light of the body is the eye, thy twin eyes be single thy whole body shall be full of light.
अर्थ :- शरीर का दीपक आँख है । यदि तेरी दोनों आँखें एक हो, तो तेरा सब शरीर उजियारा होगा । (सेतन्मैथ्यु अध्याय-6)

और भी :

“क्या होता है बजू किये से, क्या मस्जिद में जाने से ।
क्या होता है नेवाज पढ़कर सर को वहाँ झुकाने से ॥
किया न जिसने इश्क जहाँ में, उठा न हाथ जवाने से ।
जीते जी नहीं मिला खुदा तो, मिलेगा क्या मर जाने से ॥
इसी सब से मेरे दिल में आठो पहर यह मस्ती है ।
लाख इवादत से बढ़कर दुनिया में हुस्न परस्ती है ॥
जिसमें देखा उसी ने पाया, है यह तीर निशाने से ।
अजब मजा पाया है मैंने आँख में आँख मिलाने से ॥ (म० मंसूर)

इस्लाम धर्म में इसे सगले नसीरा कहते हैं और मानष जप और मानष ध्यान को क्रमशः जिक्र और फिकर कहते हैं ।

जीव और ईश्वर तत्त्वतः एक ही है। भेद केवल इतना ही है कि जीव अपने स्थान बिन्दु से अज्ञान के कारण नीचे उतर आया है इसलिए यह ईश्वर से अलग हो गया है और अज्ञान-अंधकार में स्थित हो जाने के कारण दुःख भोग रहा है । जब कभी संतों की जीव पर अनन्य कृपा होती है तो यह बोध होता है कि हम अपने स्थान बिन्दु से नीचे उतर कर अज्ञान-मंडल में चले आये हैं, यहाँ वियोग का कारण है । इसलिए मौलाना रूम ने कहा है।

“खुदा जुदा की एक ही सूरत, नुक्ता भेद बताता है ।

नुक्ता नीचे नुक्ता ऊपर, नुक्ता आता जाता है ।”

खुदा और जुदा को गौर से देखने पर केवल बिन्दु का ही अन्तर नजर आता है । अतः जब जीव संत सद्गुरु की कृपा से साधना द्वारा इस बिन्दु को अपने ऊपर धारण कर पाता है, तब जीव शिव (ईश्वर) में कोई अन्तर नहीं रह जाता ।

मौलाना रूम कहते हैं :-

“नोकते के हेर फेर से, तुमसे जुदा हुआ ।

नोकता जो रक्खा सर पर, खुद ही खुदा हुआ ॥”

अतः यह बिन्दु यानी नुक्ता जीव को पीव बना देता है । लेकिन, इसकी प्राप्ति तभी संभव है,

हम अपने अन्दर बिन्दु को ठीक-ठीक धारण करें। तभी हम शब्द सिंधु में समाकर भव-सिंधु को पार कर सकते हैं। इस बात की पुष्टि संत पलटु साहब ने भी इस प्रकार की है :-

“बिन्दु में तहँ नाद वोलेँ रैन दिवस सुहावन ।

दास पलटु होय ऐसन सोई विष्णु स्वरूपन ॥ ”

इस तरह हम साधना के दो रूप देखते हैं। प्रथम स्थूल, जिसमें स्थूल नाम रूप की हम साधना करते हैं। दूसरा सूक्ष्म, जिसमें बिन्दु और नाद की साधना की जाती है। बिन्दु साधना को सूक्ष्म-सगुण साकार उपासना कहते हैं। बिन्दु और नाद से ही स्थूल-रूप और नाम बना है। इसलिए बिन्दु और नाद की सूक्ष्म साधना अत्यन्त अपेक्षित एवं स्वाभाविक है। इसके किये बिना सारे आवरणों से हम पार नहीं जा सकते। इसलिए हम इसे उपनिषद् में भी पाते हैं यथा :-

“बिन्दु नाद महालिङ्गं शिव शक्ति निकेतनम् ।

देहं शिवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वं देहिनाम् (योग शिखोपनिषद्)

सूक्ष्म साधना के भी दो भेद हैं, यथा:- दृश्य और अदृश्य ।

बिन्दु-ध्यान दृश्य साधना है। नाद-ध्यान अदृश्य साधना है।

इसके भी दो भेद हैं। पहला है आहत ध्वन्यात्मक शब्द ध्यान। इसे अरूप सगुण उपासना कहते हैं। दूसरा है अनाहत ध्वन्यात्मक शब्द-साधना (ध्यान) इसे निर्गुण निराकार उपासना कहते हैं। अब हम लोग इन दोनों नाद-ध्यान पर विचार करेंगे। इसे सुरत शब्द-योग या नादानुसंधान भी कहा जाता है। जब साधक प्रकाश मंडल की साधना पूरी कर लेता है, तब वह त्रिकूटी के पार जाने पर ध्वन्यात्मक नाम की साधना सद्गुण से जानकर प्रारंभ करता है। जिस तरह दृष्टियोग की साधना इन्द्रिय-निरोध के लिए है उसी तरह नादानुसंधान की साधना मनोनिरोध के लिए है। यद्यपि बिन्दु और प्रकाश में भी शब्द समाहित रहता है, फिर भी स्वतंत्र रूप से कारण मंडल के शून्य और महाकारण मंडल की भँवर गुफा में आहत नादानुसंधान की साधना करनी होती है। इसे अनहद शब्द-साधना भी कहा जाता है। यह आहत ध्वन्यात्मक शब्द बड़ा ही शक्तिशाली होता है। जिस प्रकार मदान्ध हाथी बिना अंकुश के रोका नहीं जाता, ठीक उसी प्रकार विषयों की आनन्द-बाटिका में विचरण करने वाला मदान्ध चित्त (मन) बिना नादरूप अंकुश के नहीं रोका जा सकता। यथा :-

“मनोमत्तगजेन्द्रस्य विषयो धानचारिणशः ।

नियामन समर्थोऽनं निनादो निशितांकुसः ॥” (नाद बिन्दुपनिषद्)

अतः नाद साधना साधक के लिए अनिवार्य है। बालुका-राशि को गिनना जितना असंभव है, उससे ज्यादा इस अनहद नाद को गिनना असंभव है। नाद में अपने केन्द्र की ओर खींचने का गुण होता है।

इसलिए नीचे का शब्द मन को खींचकर अपने से ऊपर के केन्द्र पर पहुँचकर आने में पकड़ा देता है। इस प्रकार मन अनहद नादों के सहारे खिंचकर शून्य मंडल को पाए का में पहुँचता है। इस महाशून्य से मन आगे नहीं जा सकता। इसके आगे मन की ओर करती है क्योंकि सूरत का मंडल इसके आगे है। इसलिए सूरत अपने निज कैवल्य मंडल तक पहुँचने के पूर्व ही सूरत विषयों का पूर्णतया परित्याग कर देती है। इस मंडल तक पहुँचने के पूर्व ही सूरत विषयों का पूर्णतया परित्याग कर देती है। निर्विषय मनः' शास्त्र में कहा गया है।

इस तरह सूरत निर्विषय होकर सारशब्द को ग्रहण करती है। यह शब्द परमात्मा है। इसलिए यह ओम् स्फोट, उद्गीय, शब्दब्रह्म, राम नत, शिवनाम, कृष्णनाम, सत्यनाम भी पुकारा जाता है। इसी शब्द से सम्पूर्ण सृष्टि हुई है। जो भाग्यवान् साधक गुरु - कृष्ण लेता है, वह फिर इस शब्द से छूट नहीं पाता। यह शब्द साधक को पकड़ लेता है और संयुक्त करा देता है, यथा :-

'शब्द निरंतर में मन लगा मलिन वासनाभागी। उठत - बैठत कबहुँ न छुटै, ऐसा ताही (संतकबीर साहब) और भी यथा :- ' सोवत जागत ऊठत बैठत टुक बिहीन नहीं तारा । कि जंतर निस दिन बाजे जम जालिम पचिहारा ॥' (संत दरियासाहब बिहारी)

यह शब्द अविनाशी, चेतन, अपरिवर्तनशील, गतिशील, कम्पमय, एवं ससीम है। अविनाशी चेतन, अपरिवर्तन-शील, ध्रुव और असीम है। ईश्वर से यह शब्द स्थूल दशा में ईश्वर इसमें भी व्यापक है यह शब्द चराचर जगत का प्राण है। इसे संतों ने उलटा नाम इसलिए कि संसार का वर्णात्मक नाम नाभि से उत्पन्न होकर मुँह तक आता है यानि इसकी से ऊपर की ओर है, लेकिन ध्वन्यात्मक नाम परमप्रभु सर्वेश्वर से उत्थित होकर सारे ब्रह्माण्ड पर कर संसार तक और पिंड के स्थूल स्नायुओं तक ऊपर से नीचे की ओर आता है। इसीलिए इस नाम के समक्ष उलटा नाम भी संतों ने कहा है। इस नाम भजन करनेवाला ही ब्रह्मवत् शुद्ध हो ही हो जाता है। यथा :-

"उलटा नाम जपत जग जाना ! बालमीकि भये ब्रह्म समाना ॥"

और भी :- जान आदि कवि नाम प्रतापु । भयउ शुद्ध करि उलटा जापू ॥
(गो० तुलसीदास जी)

इसी को संतो ने बालरूप कहकर भी संबोधन किया है। इसलिए कि इसी नाम के द्वारा सां ई है। बालकरूप से कतिपय लोग बालकरूप भगवान राम, कृष्ण, आदि का ध्यान - पूजन करते हैं। ऐसे लोगों के लिए निवेदन है कि अगर इसका तात्पर्य ऐसा होता तो कागधुशुण्डि के लालक रूप को देखकर मोह हुआ था, ऐसा नहीं होता। इससे भी जान पड़ता है कि इसका दिनाम का भजन ही है। संतो की वाणियों में भी यही प्रमाण मिलता है यथा :-

“बन्दो बाल रूप सोई रामू ।

सब विधि सुलभ जपत जिसु नामू,” (गो० तुलसीदास जी)

और भी :- गगन सिखर मैंहि बालक बोलहि, वाका नाम धरहुगे केसा ।” (संत गोरखनाथ जी)

इस नाम-भजन करने वाले को पुनः जन्म-मरण के चक्र में पड़कर इस संसार में नहीं आना पड़ता। यही साधना-पथ में सबसे अंतिम और सर्वोपरि भजन है । जिसे नाम-भजन भी कहते हैं । यह नाम भजन साधक को अपने उद्गम स्थान परमात्मा में मिलाकर ही छोड़ता है, जहाँ जाने पर पुनर्जन्म नहीं होता सदा के लिए जीव मुक्त हो जाता है, इसलिए गो० तुलसीदास जी ने लिखा है, यथा :-

“जासुनाम सुमिरत एक बारा । नर उतरहि भव सिंधु अपारा

और भी :- नाम लेत भव सिंधु सुखाही । करहु विचार सुजन मन माँही” जिन्होंने इस नाम को नहीं पाया, वे इसका भजन करके संसृति चक्र से अपने को नहीं छुड़ाया, उनका साधु का वेश बनाकर तीर्थों और गंगा आदि पवित्र नदियों का सेवन करना व्यर्थ है, क्योंकि इस नाम भजन साधना के बिना आवागमन से कोई नहीं छूट सकता । इस नाम-भजन करने वाले को वर्णात्मक नाम-भजन, जो मुँह और जिह्वा से किया जाता है, करने की जरूरत नहीं रह जाती । यथा :-

“जाके नाम न आवत हिये” ॥

काह भये नर कासी बसे से, काह गंगा जल पिये ।

काह भये नर जटा बढ़ाये, काह गुदरी के सिये ॥

काह भये कंठी के बाँधे, काह तिलक के दिये ।”

कहै कबीर सुनो भाई साधों, नाहक ऐसे जिये ॥”

(संत कबीर साहब)

और भी:- मुँह कर की मिहनत मिटी, सतगुरु करि सहाय ।

घट में नाम प्रगट भया, वक बक मरै बलाय ॥” (संत कबीर साहब)

यह शब्दब्रह्म संसार के सभी चर-अचर में परिव्याप्त है । मनोनिरोध की साधना नहीं करने वाले का मन चंचल और अशांत रहने के कारण इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म शब्द को ग्रहण कर सकना संभव नहीं है । लेकिन साधना में रत साधकों के लिए पूर्ण संभव है । संत तुलसी साहब की वाणी में हम पाते हैं यथा :-

“कुदरति काबे के महाराब में सुन गौर से ।

है आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिए ॥

यह ईश्वरी आवाज हम सबों को बुला रही है, परन्तु चित्त विक्षिप्तता के कारण हमलोग उस गैबी आवाज को सुन नहीं पा रहे हैं ।

"आदिनाम पारस अहै, मन है मैला लोह ।"
"आदिनाम पारस अहै, मन है मैला लोह ॥"

"आदिनाम पारस अह, मन ह
परसत ही कंचन श्या, छुटा बन्धन मोह ॥" (संत कबीर साहब)

इसीलिए स्तुति करें, प्रार्थना करें और उपासना करें। उपासना में मानस जप करें, मानस ध्या-
न करें, दृष्टि-योग की क्रिया करें और नादानुसंधान करें। संतों ने यह क्रिया बतलायी है। जिस किसी भी
में आप जाइए, दृष्टि-योग और नादानुसंधान का प्रतीक पायेंगे। आप गिरिजा घर जाइये। वहाँ चोमक
जलती हुई और घंटा बजता हुआ पायेंगे। मोमबत्ती प्रकाश का प्रतीक और घंटा नाद का प्रतीक है। वहाँ चोमक
मस्जिद में जाइये, वहाँ चिराग जलता है और मुल्ला ऊपर खड़ा होकर अजान देता है। वह चोमक
का प्रतीक है और भीतर मस्जिद में चिराग प्रकाश का प्रतीक है। आप मंदिर में जाइये। वहाँ चोमक
कि ठाकुरबाड़ी में आरती उतारी जाती है, वहाँ भाँझ-घण्टा भी बजाते हैं। ज्योति और शब्द उपासना
का ही प्रतीक बाहर में दिखाई पड़ता है। जो अन्दर की बात नहीं जानते हैं वे बाहर में प्रकाश पाते
हैं और घण्टा बजाते हैं।

हैं और घण्टा बजाते हैं ।
आप अपने अन्दर की ज्योति पकड़िये, अन्तर्नाद को पकड़िये । यही एक रास्ता ईश्वर तक जाने का है । लेकिन, मैं कहूँगा, लोग कहा करते हैं, कि पटना आने के लिए हर तरफ से अनेक रास्ते हैं । लेकिन, मैं कहूँगा, के संबंध में ऐसी बात नहीं। अनेक रास्ता कहने वाले बाहरी संसार में कितने भी प्रवीण हों, लेकिन अध्यात्म-ज्ञान के लिए वे अत्यन्तदीन हैं, जैसे भोजन करने का रास्ता मुँह, देखने का रास्ता है आँखें, सूँघने का रास्ता है नाक सुनने का रास्ता कान और मल, मूत्र-विसर्जन के रास्ते हैं गुदा और लिंग । एक-एक काम के लिए एक ही रास्ता है उसी तरह ईश्वर तक जाने का रास्ता एक है वह है अन्तरमार्ग का आरम्भ आज्ञाचक्र से होता है, सहस्रदल कमल में जाता है । फिर शून्य में जाता है महाशून्य में जाता है, भँवर गुफाओं में जाता है, सत् लोक में जाता है और फिर परम प्रभु परमात्मा को पाता है । यही एक सीधा रास्ता है । जैसे आसाम से दिल्ली तक एक मार्ग ग्रैन्ड ट्रंक रोड है। उसी तरह आज्ञाचक्र से चलिये और “निःशब्दं परम पदम् तक” पहुँचिये । यही एक रास्ता है ईश्वर तक जाने का वहाँ पहुँचने पर ही “एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा ॥” के प्रत्यक्ष दर्शन होता है ।

इसके लिए पवित्र जीवन चाहिए । पवित्र जीवन के लिए झूठ, चोरी, नशा, हिंसा और व्यभिचार इन पंच पापों से विरत रहिये । इससे बाहरी और अन्तःकरण की पवित्रता आयेगी । इसीलिए नित्य आत्मसत्संग करना चाहिए, ध्यान करना चाहिए और जीवन-निर्वाह के लिए कुछ-न-कुछ सच्ची कमाई अवश्य कीजिये । स्वावलम्बी बनिये ।

जीवन बिताओ स्वावलम्बी भरम भाँड़े फोड़ि कर ।

सन्तों की आज्ञा ये है मैंहीं माथ धर छल छोड़कर ॥

(महर्षि मेंहीं पदावली)



रघू

श्री मनमीत कुमार

लेखा अधिकारी

मई की गरमी थी। दरभंगा के दूर स्थित गाँव में एक पगडंडी पर रघू खाली पाँव चल रहा था। बीच दोपहर में जबकि कोई नजर नहीं आ रहा था, रघू के पद चाप की आवाज आ रही थी। आसमान में सूर्य अपने पूरे उफान पर था। रघू धूप की गर्मी से बेखबर चुपचाप धीरे-धीरे चला जा रहा था। रघू का काला शरीर पसीने से और चमक रहा था। गले पर एक अंगोछा तथा हाथ में एक पोटली लिये वह इस तरह से चल रहा था कि मानों गर्मी का उसपर कोई असर ही नहीं हो रहा हो। देखकर यह कहना मुश्किल था कि उसके दिल में कोई कष्ट या खुशी है अथवा नहीं।

रघू को पंजाब जाना था। गाँव वालों ने उसे बताया था कि पंजाब में खूब पैसा है। घर की स्थिति उसकी ठीक नहीं थी। माँ थी नहीं। पिताजी उसके बीमार चल रहे थे। एक बहन थी फूलिया। उसकी शादी करनी थी। शादी पास के एक गाँव में ठीक हो गई थी। लड़का दरभंगा शहर में साईकिल की दुकान में काम करता था गाँव से शहर जाने में उसे चार मील रोज पैदल आना-जाना पड़ता था। इसलिए आने-जाने के लिए उसने साईकिल की माँग की थी। उसे एक घड़ी चाहिए थी वह भी गोल्डेन ज्वेल की। साथ में रु. 3000/- नगद चाहिए था। रघू के घर में गरीबी अपनी पूरी जवानी पर थी। शादी में खर्चा होना था। इसीलिए गाँव वालों ने उसे समझाया कि बाहर जा कर पैसा कमा कर लाओ और फूलिया की शादी फौरन कर दो। गाँव वालों ने पटना से दिल्ली जाने वाली गाड़ी का टिकट (आरक्षण सहित) मंगा दिया था।

रघू ने जाल में थोड़ी तेजी लाई और पसीने से तरबतर शरीर के साथ दरभंगा बस स्टैण्ड पर जा पहुँचा। बस स्टैण्ड पर पटना-पटना आवाज करते हुए बस कंडक्टर, खलासी तथा तीन-चार अन्य व्यक्ति रघू पर टूट पड़े।

खलासी ने पूछा - “पटना चलना है”

रघू - “हाँ”

खलासी - तो खड़ा क्या कर रहा है।

“चल बस पर बैठो।”

इससे पहले रघू कुछ कहता। चार-पाँच लोगों ने उसे इस कदर धक्का दिया कि वह सीधा बस के अन्दर जा पहुँचा। पोटरी बस के एक कोने में फेंका गई। फिर भी रघू की आँखें शून्य एवं भाव विहीन थीं। उसने एक आगे वाली सीट पर बैठने की कोशिश की तो खलासी की आवाज आई - “जा

पीछे बैठ" ।

रघू चुपचाप पोटरी लिए पीछे बैठ गया । बस में धीरे-धीरे भीड़ बढ़ गयी । इसी बीच बस कंडक्टर ने उससे पटना का भाड़ा वसूल लिया । बस खुलने को थी । इसी बीच खलासी की आवाज आयी - "श्रीमान, आप !" हुजूर आगे तो सीट नहीं है, परन्तु पीछे की खाली सीट पर बैठा सकते हैं । श्रीमान के हमी भरते ही बस खलासी उन्हें अन्दर ले आया तथा रघू को उसने कहा "उठ, सीट पर बैठ जायेगा क्या ? रघू सहमा हुआ उठ खड़ा हुआ । श्रीमान जी रघू के खाली किये गये सीट पर जा बैठे । रघू खड़ा-खड़ा पटना पहुँच गया । परन्तु आँख उसकी फिर भी शून्य एवं भावविहीन थी ।

पटना पहुँच कर उसने पोटरी से चूड़ा एवं गुड़ निकाल कर खाया और स्टेशन आ पहुँचा । दिल्ली जाने वाली ट्रेन प्लेटफार्म पर लग गयी थी । एक टी.टी. को शायद उस पर दया आ गई और उसे उसके डिब्बे में चढ़ा दिया । एक सज्जन ने उसे उसका सही बर्थ भी बता दिया । रघू सहमते हुए अपनी सीट पर जा बैठा मानों सीट पर बैठ कर उसने कोई गुनाह किया हो । गाड़ी दिल्ली के लिए खुल चुकी थी । तीन-चार व्यक्ति बर्थ के लिए टी.टी. के पीछे-पीछे घूम रहे थे । टी.टी. की नजर अचानक रघू पर पड़ी । वह तेजी से उसके पास आया और कहा-"उठ, बर्थ पर सोकर जायेगा" । "औकात देखी है ।" रघू उठकर खड़ा हो गया । टी.टी. ने रघू की सीट एक दूसरे व्यक्ति को दे दी । फिर भी रघू के चेहरे पर शिकन के भाव नहीं उभरे । शायद उसे इन बातों की आदत-सी हो गयी थी । वह चुपचाप नीचे बैठ गया । धीरे-धीरे उसे नींद आ गयी । रघू दिल्ली पहुँच गया और उसके बाद पंजाब में उसे ऊँट बनाने की फैक्ट्री में काम मिल गया ।

गाँव में रघू के पिता बीमार चल रहे थे । अर्थाभाव भी अपने-आप में एक बड़ी बीमारी है । कुछ दिन जिन्दगी से लड़ते-झगड़ते रहे और एक दिन भगवान को प्यारे हो गये । फूलिया घर में अकेला रह गयी । रंग तो काला था पर नयन-नख्खा तो सुन्दर थे । लोगों की नजर पर जैसे चढ़ गयी थी । जैसे-तैसे दिन गुजर रहे थे उसके । फिर एक दिन वह कहीं चली गयी किसी को कुछ पता नहीं चला ।

रघू इन सब बातों से बेखबर काम में व्यस्त था । जिन्दगी में उसने इतने उतार देखे थे कि उसका सोच कुंठित हो चुकी थी । फिर भी धीरे-धीरे वह पैसे इकट्ठे करते रहा ।

रघू वापस गाँव आ चुका था । गाँव वालों से उसे सभी बातें मालूम हो चुकी थीं । उसकी आँखें फिर भी शून्य एवं भावविहीन थीं ।

फिर वही मई का महीना था । रघू चुप-चाप गाँव की पगडंडी पर चला जा रहा था ।



कश्मीर है भारत का

श्री चन्द्रिका सिंह,
वरिष्ठ लेखाकार

जन्नत की है तस्वीर, यह तस्वीर न देंगे,
हाथों में किसी गैर के, तकदीर न देंगे ।

कश्मीर है भारत का
कश्मीर न देंगे ।

धमकी से, किसी जुल्म से हम डर नहीं सकते,
समझौता किसी से देश का हम कर नहीं सकते ।

क्या डालेगा फूट यह घर है कबीर का
जो फूल चमन का है, चमन पर ही मिटेगा
हम देख रहे हैं खेल, अपने वतन पर ही मिटेगा,
लुटने कभी आजादी की जागीर न देंगे,
कश्मीर है भारत का
कश्मीर न देंगे ।

विदेश से तूने बड़े हथियार मंगाए, कीलर ने सेटर से सेवर जेट गिराये ।

हथियारों से कर नहीं सकता तू दिल पे कब्जा
ताकत से बड़ा देश की हिम्मत का है जलवा ।

गद्दार है यह हिन्द का जो हथियार तुझे दे
दीवानों के हम हाथ में कश्मीर न देंगे

कश्मीर है भारत का
कश्मीर न देंगे ।



ब्रह्मपुर धाम

हरे राम प्रधान

वरिष्ठ लेखाकार, पेंशन-1 अनुभाग

बिहार प्रान्त के बक्सर जिलान्तर्गत रघुनाथपुर रेलवे स्टेशन से पाँच किलो मीटर उत्तर ब्रह्मपुर धाम अवस्थित है। रेल मार्ग द्वारा दिल्ली जाने या आने के क्रम में रघुनाथपुर रेलवे स्टेशन पर आपकी नजर पड़ी हो तो अवश्य देखे होंगे कि वहाँ पर मोटे अक्षरों में लिखा हुआ है कि ब्रह्मपुर धाम जाने के लिए यहाँ उतरें।

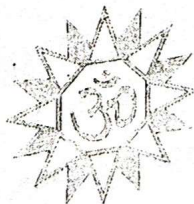
ब्रह्मपुर में बाबा बरमेश्वरनाथ का विशाल मंदिर है। मंदिर से सटे पूरब में तालाब है जिसमें सालोंभर पानी भरा रहता है। तीर्थयात्री उस तालाब में स्नान करते हैं तथा बाबा बरमेश्वरनाथ पर जल चढ़ाते हैं। सावन महीना में श्रद्धालु बक्सर से गंगा जल काँवर में भरकर पैदल ब्रह्मपुर आते हैं और बाबा बरमेश्वरनाथ पर जल चढ़ाते हैं। प्रत्येक महीना शिवरात्रि के दिन अच्छी भीड़ रहती है। परन्तु फाल्गुनी शिवरात्रि और बैसाखी शिवरात्रि के समय ब्रह्मपुर धाम का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। उस समय में ब्रह्मपुर में विशाल पशु मेला लगता है, जो दूर-दूर तक फैल जाता है। मेला, में सभी प्रकार के पशु आते हैं। हरिहर क्षेत्र पशु मेला के बाद एशिया में दूसरे नम्बर का पशु मेला ब्रह्मपुर में लगता है। दूर-दूर से व्यापारी इस मेला में पशुओं की खरीद-बिक्री के लिए आते हैं।

बाबा बरमेश्वरनाथ का मंदिर जिसमें शिव लिंग है, उसका दरवाजा पश्चिम की ओर है, यानी मंदिर में जल चढ़ाने के लिए पश्चिम से प्रवेश करना पड़ता है। मंदिर का दरवाजा पश्चिम की ओर होने के पीछे एक लोकोक्ति है। कहते हैं कि शुरु में मंदिर का दरवाजा पूरब की ओर था जिधर अभी तालाब एवं उसकी सीढ़ियाँ हैं। तालाब में स्नान करके उधर से जल लेकर लोग मंदिर में प्रवेश करते थे, और बाबा बरमेश्वरनाथ पर जल चढ़ाते थे। परन्तु एक समय की बात है, जब बादशाह औरंगजेब हिन्दुओं के मुख्य-मुख्य मंदिरों को ध्वस्त करता हुआ ब्रह्मपुर में बाबा बरमेश्वरनाथ के मंदिर को ध्वस्त करने आ पहुँचा। उस समय मंदिर के पुजारी एवं अन्य लोग औरंगजेब से मंदिर की महत्ता एवं बाबा बरमेश्वरनाथ की महिमा के गुणगान किए और कहे कि मंदिर को मत तोड़वाइये। इसपर औरंगजेब ने कहा कि मंदिर को हम नहीं तोड़वायेंगे, जब बरमेश्वरनाथ के मंदिर का दरवाजा पूरब के बजाय पश्चिम की ओर हो जाय, यह असम्भव था, परन्तु रातोंरात बाबा बरमेश्वरनाथ की महिमा से मंदिर का दरवाजा पूरब से पश्चिम की ओर हो गया। सभी लोग देखकर अवाक रह गये। औरंगजेब ने अपने वादा के अनुसार मंदिर को तोड़वाना छोड़ दिया, और आगे प्रस्थान कर गया। तभी से मंदिर का दरवाजा पूरब से बन्द हो गया और पश्चिम की ओर दरवाजा का मुँह हो गया और आजतक उसी हालत में विद्यमान है।

फाल्गुनी शिवरात्रि के दिन फगुआ गान का आयोजन होता है। दूर-दूर से लोग अपने दल-बल के साथ झाल, ढोलक, मजीरा आदि वाद्य यंत्र के साथ आते हैं और प्रतियोगिता का आयोजन होता है बाद में तय होता है कि किस गाँव का दल फगुआ गाने में सर्वश्रेष्ठ हुआ। इसे देखने एवं सुनने के लिए दूर-दूर से लोग ब्रह्मपुर धाम में आते हैं।

बैसाखी शिवरात्रि के समय भी ब्रह्मपुर धाम में काफी चहल-पहल रहती है। मेले के अन्दर जितने कुँए हैं, उनपर पनशाला खुल जाता है। पनशाला पर पानी पिलाने के साथ-साथ गुड़ और बताशा का भी इन्तजाम रहता है। पनशाला चलाने वाले लोग राहगीर को पानी पिलाने के पहले गुड़ अथवा बताशा खिलाते हैं, और तब पानी पिलाते हैं। राहगीर पानी पीकर, तृप्त होकर दुआयें देता हुआ मेले में भ्रमण करने चला जाता है। ऐसा अद्भुत पनशाला अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है।

बचपन में हमलोग भी अपने दोस्तों के साथ बैसाखी शिवरात्रि के दिन मेला घूमने ब्रह्मपुर धाम गये थे। मेला घूमते-घूमते बहुत जोरों की प्यास लगी, क्योंकि हमलोग जलेबी का नाश्ता किये थे जो काफी मीठी होती है, और मेला का यह प्रिय नाश्ता होता है। हमलोग एक कुँए पर पानी पीने के लिए गये। वहाँ पर देखते हैं कि दो-तीन छोटे-छोटे बच्चे हाथ का अंजली बनाकर पानी पी रहे हैं, और कुछ बच्चे पानी पीने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। जैसे ही वे बच्चे पानी पीकर हटे दूसरे बच्चे कतार में आ गये पानी पीने के लिए, परन्तु पनशाला वाले बाबा ने उन बच्चों से पहले हम लोगों को पानी पीने के लिए कहा जिसमें हमलोग पानी पीकर बाबा को प्रणाम किये और बगल में खड़े हो गये। बाबा ने कहा कि ये बच्चे पानी पीने के लिए यहाँ नहीं आते हैं, बल्कि गुड़ और बताशा खाने के लिए आते हैं, विश्वास नहीं होता है तो पानी पीने के वक्त इनकी अंजुली को गौर से देखना। पानी पीते समय अंजुली की अंगुली को अलग कर छिद्र बना देते हैं ताकि पानी नीचे गिर जाये। हमलोगों ने गौर से देखा बाबा की बात सही थी, बच्चे पानी पीने के लिए वैसे ही कर रहे थे, जैसा कि बाबा ने कहा था। आज भी बाबा की कौतुहल भरी बातें एवं अबोध बच्चों का गुड़ एवं बताशा के लिए पानी पीने का बहाना बनाना आँखों के सामने साकार हो उठता है।



मानस में नारी चरित्र

श्री प्रेम शंकर प्रसाद
वरिष्ठ लेखाकार

'श्री रामचरित मानस' का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं, जगत के साहित्य में निराला है। इसके जोड़ का सर्वांग सुन्दर, उत्तम काव्यों के लक्षणों से युक्त आदर्श गृहस्थ जीवन, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पतिव्रत धर्म, सर्वोच्च भक्ति-ज्ञान, त्याग वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाला कोई दूसरा ग्रन्थ कदाचित् संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं लिखा गया। तुलसी भक्तों के लिए भारत में 'रामचरित मानस' वेद की तरह समादृत है। एक-एक वाक्य वेद वाक्य की तरह है, वह सत्य एवं शाश्वत है।

आज के प्रगतिवादी, नारी स्वतंत्रता के समर्थकों की दृष्टि में तुलसीदास रुढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी और नारी समुदाय के प्रति अनुदार एवं संकीर्ण थे। अतः इस विषय में निष्पक्ष परीक्षण और तटस्थ विवेचन की आवश्यकता है। महाराज मनु के शब्दों में "स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं है।" पितारक्षति कौमार्य, भर्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थावरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमहति। अर्थात् कुँवारी अवस्था में पिता उसका रक्षक है युवा में पति, बुढ़ापे की अवस्था में पुत्र उसका रक्षक है। इस प्रकार वह कभी स्वतंत्र नहीं रह सकती। वहीं तुलसीदास जी के महाकाव्य 'राम चरितमानस' में रामायण के पात्रों में सीता, कौशल्या और सुमित्रा के चरित्र तो बड़े ही उदात्त एवं स्निग्ध हैं। सीता कवि की आराधना हैं जगत जननी, कौशल्या और सुमित्रा कवि के आराध्य देव भगवान राम की माताएँ हैं। उनका अंकन उसी उदात्त भाव से करना कवि की बाध्यता थी। अतः इन दिव्य चरित्रों से भिन्न सामान्य नारी वर्ग ही हमारा विवेक विषय हो सकता है।

मानस में पुरुष एवं नारी दोनों पात्रों ने नारी जाति की भर्त्सना एवं निन्दा की है।

अब हम उच्च कोटि के आदर्श पात्रों की अभिव्यक्तियों की ही समीक्षा करेंगे। प्रथम हम मानस के अंतर्गत नारी पात्रों की उक्तियों का विवेचन करेंगे :

भगवान शंकर की पत्नी सती की उक्ति द्रष्टव्य है :-

सती हृदय अनुमान किया, सबजानेउ सरवग्य ।

किन्ह कपट मैं शंभू सन, नारि सहज जड़ अग्य ॥

सतीजी ने हृदय में अनुमान किया कि सर्वज्ञ शिवजी सब जान गए, स्त्री स्वभाव से ही मूर्ख और बेसमझ होती है और मैंने शिवजी से कपट किया। बालकाण्ड-59 ॥क॥ तपस्विनी अनुसूया नारी जाति के लिए कहती है, अरण्य काण्ड दोहा (5) क

"सहज अपावनि नारि पति सेवत शुभगति लहहि ।" नारी जन्म से ही अपवित्र है । किन्तु पति सेवा करके अनायास शुभगति प्राप्त कर लेती है ।

तपस्विनी शक्ती भी नारी भर्त्सना में पीछे नहीं है -

अधम ते अधम अधम अति नारी ।

तिन्ह यह मैं मति मंद अधारी ॥

जो अधम से भी अधम है, उसमें स्त्रियाँ उनमें भी अत्यन्त अधम है, (अरण्य कांड)

जब ऐसी-ऐसी महिमा मंडित नारियाँ ही नारी जाति की सहज जड़ अज्ञ, सहज अपावन अधम ते अधम, अधम अति नारी स्वीकारती है तो पुरुष वर्ग को कहने के लिए बहुत कुछ धरा पड़ा है । जड़ पाय समुद्र ने तो नारी जाति को ढोल गँवार शुद्र पशु नारी, । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥ इसके अनन्तर अब पुरुष पात्रों की उक्तियों पर विचार किया जाय राम वन-गमन के समय अयोध्या निवासी कहते हैं :-

सत्य कहहिं कवि नारी सुभाऊ ।

सब विधि अगम अगाध दुराऊ ।

निज प्रतिविम्ब वरूक गहि जाई ।

जानि न जाई नारी गति भाई ॥

अर्थात् नारियों का स्वभाव सदैव अबूझ अथाह और रहस्यमय है । वे कुछ भी कर सकती हैं । इस क्रम में आदर्श पात्र भरत जी की उक्ति भी विचारणीय है । वे माता कैकई को लक्ष्य कर कहते हैं -

विधि न नारी हृदय गति जानी ।

सकल कपटअघ अवगुन खानी ॥

अर्थात् नारी हृदय को विधाता भी नहीं जान सकते, नारी सब प्रकार के छल-कपट पाप और अवगुणों की खान है ।

इस प्रसंग में कवि के आराध्य देव मर्यादा पुरुषोत्तम राम की उक्ति विशेष रूप से दृष्टव्य है । वे नारद जी से कहते हैं -

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह के धारि ।

तिन्ह मह अति दारुण दुखद माया रूपिनारि ।

जप-तप नेम जलाशय भारी ।

होई गृष्म सोषई सब नारी ॥

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह मदादि मानव मात्र के लिए कष्टदायक हैं, परन्तु इन सबों से भी बढ़कर दारुण दुखद नारी ही है। जिस प्रकार नारी जप-तप और नियमादि का शोषण कर लेती है। उसी क्रम में भगवान राम की दूसरी उक्ति है :

बुद्धि बल सील सत्य सब मीना ।
वंसी सम तिय तिय कहहि प्रवीना ॥

अर्थात् जिस प्रकार बंशी मछली को फाँस लेती है उसी प्रकार नारी बुद्धि, बल, शील सभी को फाँस लेती है और उन्हें विनष्ट कर डालती है ।

इस प्रसंग में आदर्श पात्र भरत जी एवं मानस के चरित्र नायक राम के साक्ष्य के बाद और अधिक प्रमाण की आवश्यकता रह नहीं जाती । रावण राक्षस है, 'रामचरित मानस' का प्रति नायक है । महापंडित एवं शंकर का परम भक्त भी है । उसके विचार में :-

नारी सुभाव सत्य कवि कहही ।
अवगुण आठ सदा उर रह ही ॥
साहस अनृत चपलता माया ।
भय अविवेक अशौच अदाया ॥

अर्थात् साहस, झूठ, चपलता, कपट, भय, मूर्खता अपवित्रता और निर्ममता नारी के हृदय में अक्षुब्ध रहते हैं ।

अंत में शूर्पनखा प्रसंग में मानस के परम ज्ञानी एवं भक्त कथाकार काक भुशुण्डी जी महाराज का कथन भी दृष्टव्य है :

भ्राता पिता पुत्र उर गारी ।
पुरुष मनोहर निरावत नारी ॥
होहि विकल सम मनहि न रोकी ।
जिमि रवि मणि द्रव रविहि विलोकी ॥

उपरोक्त चौपाई में नारी-जाति के लिए इससे अधिक घृणित अभिव्यक्ति हो नहीं सकती है । इस उक्ति के अर्थ बोध मात्र से, नारी वर्ग का तो प्रश्न ही नहीं पुरुष वर्ग का भी मस्तक लज्जा से झुक जाता है । ऐसी घृणित अभिव्यक्ति विश्व साहित्य में दुर्लभ है ।

यद्यपि आज के मानस भक्त पाठक इस विषय पर सफेदी पोतने को प्रयासरत हैं तथापि रंग इतना गहरा है कि इस पर कोई भी सफेदी इसे ढक नहीं सकती ।



चेतना

श्री मनोज कुमार
लिपिक

एक दिन साहित्य का चढ़ा मुझे बुखार ।
नजर नहीं आ रहा था मुझे कोई उपचार ॥
मैंने एक मित्र से सलाह मशवरा किया
उसने बताया -

अरे ! यार ! यह तो है मौसमी बुखार ।
जा ले आ दो-चार अनार ॥

मैंने अनार मँगवाया था
दो-चार नहीं दस-बारह खाया था
फिर भी नहीं मुस्कराया था ।
कैसे आता काम कोई आहार ।

जब चढ़ा था मुझे साहित्य का बुखार ॥
विचारों में खोया रहता ।

न भूख लगती न प्यास ।

फिर भी मन में थी एक आस ।

मेरे एक अनुभवी मित्र ने पूछा -
बता यार ! तेरा सिम्प्टम क्या है ?

मैंने कहा -

कुछ सुनने को जी चाहता है ।

कुछ सुनाने को जी चाहता है ॥

उसने झट बतलाया -

अरे तुझे चढ़ा है साहित्य का बुखार ।

तेरा करेगा साहित्य का डॉक्टर ही उपचार ।

पास ही थे एक प्रतिष्ठित साहित्य के डॉक्टर
मैं पहुँच गया उनके पास झटपट

ध्यान, मग्न हो वह सुने

और गम्भीर मुद्रा में बोले

तुझे सही में चढ़ा है साहित्य का बुखार

तेरा त्रैमासिक 'चेतना' ही है एक मात्र उपचार ।

झट-पट लिख डाल कविताएँ दो-चार

तेरा यही एक मात्र उपचार

पहली बार मेरे होठों पे आयी मुस्कान

मैंने तहे दिल से दिया उन्हें सम्मान ॥

देख उनका प्यारा व्यवहार

बदल गये मेरे आचार-विचार

मैंने कहा -

मेरे मित्र हैं और दो-चार

उन्होंने बोला -

बता सबको "त्रैमासिक चेतना" ही उन

सबका एक मात्र उपचार ।



बेचारा बैचलर

श्री अजय कुमार ईसर,
लिपिक ।

जून का महीना, उसपर इन्द्र देवता की कृपा । सड़कों पर टखने तक पानी एवं गलियों में कीचड़ । पानी एवं कीचड़ से बचने का असफल प्रयास करता एक नौजवान परेशान हाल में गलियों एवं मुहल्लों का चक्कर काट रहा है । बीच-बीच में अपनी जेब से रुमाल निकाल कर पसीना भी पोछता रहता है । कभी-कभी किसी मुहल्ले के व्यक्ति से कुछ पूछ भी लेता है फिर आगे बढ़ जाता है ।

एक घर के आगे रूकता है । वहां छोटा सा पोस्टर सटा है -

“मकान खाली है ।”

नौजवान बढ़कर दरवाजा खटखटाता है । प्रत्युत्तर में आवाज आती है, “कौन है ?” नौजवान सकपका जाता है, सोचता है, क्या उत्तर दूँ । फिर सोचकर बोलता है - ‘कृपया दरवाजा खोलिए ।’

दरवाजा खुलता है जैसे स्वर्ग का दरवाजा नौजवान के लिए खुला हो । एक भद्र महिला दर्शन देती है । सामने नौजवान को देखकर कड़े शब्दों में पूछती है - “क्या बात है” ?

नौजवान - आपका मकान खाली है, यह जानकर मैं आया हूँ । मुझे जरूरत है ।

भद्र महिला - काम क्या करते हैं । (कड़े शब्दों में)

नौजवान - नौकरी ।

भद्र महिला - शादी हो गई है, पत्नी के साथ रहेंगे । (थोड़े नम्र स्वर में)

नौजवान सकपकाकर - नहीं, शादी नहीं हुई है ।

भद्र महिला (गंभीर स्वर में) - तो बैचलर हैं । देखिए बैचलर को हम भाड़ा पर मकान नहीं देते और स्वर्ग का दरवाजा बंद हो गया ।

यह घटना न पहली है, नहीं अंतिम और नहीं अजूबा ।

ऐसी घटना शहरों में आम हो गई है । बैचलर के नाम पर मकान मालिक ऐसे बिदकते हैं कि वह इंसान नहीं भूत हो । क्या बैचलर होना गुनाह है ! यह एक यक्ष प्रश्न बन गया है ।

कोई व्यक्ति जब कहीं घर से दूर पढ़ने के लिए या नई-नई नौकरी करने जाता है तो संपत्ति कि अपना परिवार लेकर ही जाए, और यह युक्तिसंगत भी नहीं ।

एक जगह नौजवान ने 'मकान खाली है' का पोस्टर सटा देखा तो वह उस घर में गया। वहाँ जाने पर मकान मालिक ने नौजवान को प्रेम से बैठाया। पीने के लिए पानी दिया और फिर चाय का दौर भी चला। नौजवान ने सोचा मकान मालिक शिक्षित एवं नरम दिल हैं, यहाँ शायद काम बन जाए। फिर कमरा दिखाकर मकान मालिक ने कुछ शर्तें बतायीं, उनमें पहली ही शर्त सुनकर नौजवान के पैरों तले जमीन खिसक गई। शर्त थी एक औरत चाहे बूढ़ी हो या पाँच साल की बच्ची ही क्यों न हो, साथ में रखनी ही होगी। अब नौजवान का मामला यहाँ भी टाँय-टाँय फिस हो गया।

ऐसे नौजवान जो बैचलर हैं उन्हें मकान मिलना मुश्किल है। कहीं मिलता भी है तो वहाँ जहाँ के मकान मालिक बैचलर होना गुनाह नहीं समझते। ऐसी जगह पर न तो साफ पानी की सही व्यवस्था होती है, न ही शौचालय की और न ही माहौल शांत होता है। ऐसे में नौजवान जिस लक्ष्य को पाने के लिए घर छोड़कर बैचलर बना था, वह लक्ष्य ही अब भटककर रह जाता है। इन्सान परिस्थितियों में फँसकर क्या से क्या हो जाता है। अतः गाँवों में एक कहावत है -

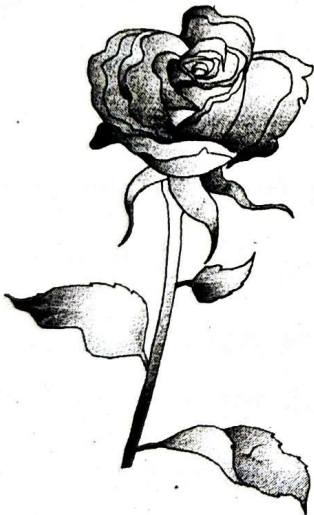
“धोबी का गदहा न घर का, न घाट का”



उस क्षितिज तक

सुश्री अहिमति

दौड़ रहे हैं हम,
उस क्षितिज तक ।
सभी दौड़ते हैं, दौड़ लगी है,
वहाँ पहुँचने के लिए ।
पर, आज तक
उस क्षितिज तक,
कोई नहीं पहुँच पाया ।
फिर भी,
सभी दौड़ पड़ते हैं
अनन्त तक फैले उस अन्त तक ।
वहाँ भी अन्त है । यहाँ भी अन्त है ।
यह अन्त और वह अन्त,
मिलकर अन्तहीन हो जाते हैं ।
एक अन्तहीन दौड़
जहाँ हर कोई दौड़ता है ।
निर्णायक नहीं, अन्तहीन ।
इस जीवन में सभी दौड़ते हैं ।
परन्तु, उस अन्त से पहले अन्त हो जाता है
मनुष्य की आकांक्षाओं का, अभिलाषाओं का,
उम्मीदों का, इच्छाओं का,
जिनके कारण मनुष्य अन्त तक दौड़ता रहता है ।
सभी यह जानते हैं
फिर भी दौड़ पड़ते हैं
सारी उम्र दौड़ते रहते हैं ।
जो नहीं दौड़ता,
वह पीछे छूट जाता है,
इस दौड़ में
जहाँ दौड़ रहे हैं हम
उस क्षितिज तक ।



वेदों से

श्री राजू कुमार सिंह
लेखाकार

कार्यालयीय, घरेलू एवं समसामयिक घटनाचक्र से घिरे हमारे सहकर्मियों को इतना वक्त ही नहीं मिलता कि वे अपनी संस्कृति के अमूल्य धरोहरों पर एक विहंगम दृष्टि डाल सकें। हम दयानन्द सरस्वती का यह वाक्य-वेदों की ओर लौटो-तो कई बार दुहराते हैं पर इसके निहितार्थ को समझे बिना ही। इस लेख में मैंने वेदों की ज्ञान-मंजूषा से कुछ अमूल्य रत्न इकट्ठे किए हैं ताकि पाठकवृन्द उसकी चमक की ओर आकर्षित हो सके।

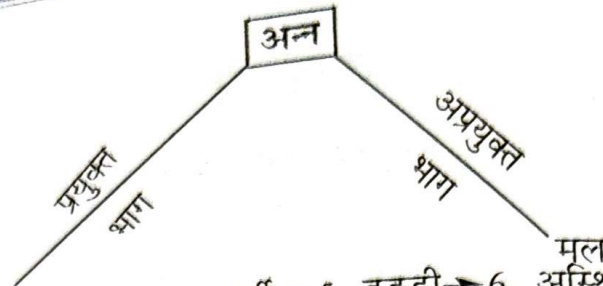
‘वेद’ शब्द संस्कृत की विद्-धातु से निकला हुआ है जिसका अर्थ होता है - ज्ञान। ये ज्ञान हम (मनुष्य), हमारे परिवेश तथा हमारे विश्व से सम्बन्धित है। वस्तुतः वेद प्राचीनतम मनुष्य के धार्मिक और दार्शनिक विचारों को मानव-भाषा में सर्वप्रथम प्रस्तुत करते हैं। पाश्चात्य विद्वान विल्सन ने कहा है - “प्राचीन विचारधारा में जो कुछ भी महत्वपूर्ण है उस सबके विषय में पर्याप्त सूचना हमें वेद देते हैं।” वेद किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं है, ये कई मनीषियों के सत्य-दर्शन का वर्णन करते हैं। इनकी संख्या चार है - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद प्राचीनतम है। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुति से सम्बन्धित मंत्र हैं। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियों का वर्णन है सामवेद संगीत-प्रधान है। इसमें भी याज्ञिक मंत्रों की प्रधानता है। अथर्ववेद में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र निहित हैं। यह एक भिन्न भाव से ओत-प्रोत है। प्रथम तीन वेदों- ऋक्, यजु, और साम - को त्रयी कहा जाता है। ये त्रयी विद्या के आधार हैं जिसकी चर्चा स्थानानुसार की जाएगी। अब हम वेदों के ज्ञान पर क्रमानुसार विचार करेंगे।

हम

यहाँ ‘हम’ मनुष्य का द्योतक है। मनुष्य की स्वरूपगत अभिव्यक्ति शरीर के रूप में होती है। शरीर की ऊर्जा को प्राण कहते हैं और प्राण की क्रियाशक्ति जिस चेतना से नियंत्रित होती है उसे मन कहा जाता है। इस तरह मनुष्य के स्वरूप को समझने के लिए उसके शरीर, प्राण, मन एवं संरचना को समझना होगा। वेदों में इन पर सुनिश्चित प्रकाश डाला गया है।

हमारा शरीर -

शरीर के निर्माण पर वेदों में सम्यक् प्रकाश डाला गया है। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में बताया गया है कि खाया गया अन्न सात भागों में बंटकर हमारे शरीर का निर्माण करता है।



1. रस→2. खून→3. माँस→4. चर्बी→5. हड्डी→6. अस्थि-मज्जा→7. वीर्य

इस प्रकार शरीर का सबसे स्थूल भाग रस है तथा सबसे सूक्ष्म भाग वीर्य है। हमारे शरीर की अग्नि जठराग्नि अन्न को इस प्रकार मथती है कि रस से लेकर वीर्य तक के सात अंश एक-दूसरे से बनते चले जाते हैं। शरीर को पुष्ट रखने के लिए मनुष्य को ब्रह्मचर्य अवस्था में वीर्य की रक्षा सावधानीपूर्वक करनी चाहिए।

उपर्युक्त सातों अंश ठोस हैं, इन्हें छुआ जा सकता है इसलिए इनका सम्बन्ध पृथ्वी से है, किन्तु इसके बाद एक ऐसा अंश आता है जो वीर्य का सार है तथा इसे छुआ नहीं जा सकता। यह है - ओज, जिसे महापुरुषों के मुखमण्डल पर देखा जा सकता है। इसे अंतरिक्ष का हिस्सा मानते हैं। यह ओज जब और सूक्ष्म बनता है तो मन कहलाता है अर्थात् अन्न की अन्तिम परिणति मन है। इसलिए कहा जाता है - जैसा अन्न, वैसा मन। यही कारण है कि हमारे धर्मग्रंथों में अन्न की शुद्धता पर काफी जोर दिया गया है। सात्विक एवं शाकाहारी भोजन मनुष्य के लिए सर्वोत्तम है।

हमारे प्राण - यदि श्वास की क्रिया बन्द हो जाए तो हमारा जीवन ही समाप्त हो जाए। हमारे शरीर की क्रियाओं का आधार प्राण है। कोई भी गति बिना प्राण के नहीं होती इसलिए प्राण समस्त जगत् में फैला हुआ है। अचेतन पदार्थों में यह ऊर्जा रूप में निहित होता है जबकि चेतन प्राणियों में यह प्राणस्वरूप विद्यमान रहता है। इलेक्ट्रॉन की गति इसी ऊर्जा का रूप है।

प्राण हमारे शरीर में तो है ही, पूरे विश्व में भी व्याप्त है। वेदों में भूर्भुवः स्वः अर्थात् पृथ्वी, अंतरिक्ष एवं द्युलोक की चर्चा की गई है। इन तीनों के क्रमशः तीन देवता हैं- वसु (औग्नि), रुद्र (वायु) और आदित्य। इन देवताओं के आधार पर हमारे शरीर में भी प्राण के तीन भेद हैं - प्राण (अग्नि से जुड़ा), अपान (वायु से जुड़ा) व्यान (आदित्य से जुड़ा)। इनमें पार्थिव प्राण तथा वायव्य अपान दोनों गतिशील हैं किन्तु सौर व्यान स्थिर हैं।

चूँकि प्राण ही हमारे शरीर की सारी क्रियाओं को संयमित करता है इसलिए जिसका प्राण पर नियन्त्रण हो जाता है उसका शरीर की सारी क्रियाओं पर नियन्त्रण हो जाता है। इसी कारण प्राणायाम का बहुत महत्व है। प्राणायाम से पूरे शरीर की शुद्धि होती है और व्यक्ति अनेक रोगों से मुक्त रहता है।

हमारा मन - जहाँ भी कोई क्रिया है वहाँ प्राण अवश्य है, परन्तु इस क्रियाशक्ति को नियंत्रित करता है मन। वेदों में मन की उत्पत्ति के बारे में बताया गया है। हम जानते हैं कि ज्ञान अनन्त है और कर्म

सन्त। हम ये भी जानते हैं कि अनन्त में इच्छा उत्पन्न नहीं होती। जब सान्त कर्म अनन्त ज्ञान के साथ मिलता है तो एक सीमा बन जाती है। जहाँ सीमा बनती है असंतुष्टि का आविर्भाव होता है और साथ ही इच्छा का भी। जहाँ इच्छा है, वहीं मन है। यह मन की सृष्टि का कारण बना। सर्वोत्कृष्ट मन का स्वामी होने के कारण ही मनुष्य को मानव या मनुष्य कहा जाता है।

विभिन्न क्रियाओं के आधार पर मानसिक चेतना को चार स्तरों में विभाजित किया गया है - श्रोवसीयस मन, सत्त्व मन, इन्द्रिय मन तथा सर्वेन्द्रिय मन। श्रोवसीयस मन सार्वभौम स्तर पर विश्व की क्रियाओं को व्यवस्थित करता है। वेदों में इसे प्रजापति कहा गया है क्योंकि उस मन से ही सृष्टि की रचना का प्रारम्भ होता है। हमारे शरीर की स्वचालित क्रियाओं को व्यवस्थित करनेवाले मन को सत्त्व मन कहा गया है। इन्द्रिय मन के द्वारा ही हम सुख-दुःख का अनुभव करते हैं। सर्वेन्द्रिय मन भिन्न-भिन्न इन्द्रियों से जुड़कर इन्हें अपने-अपने व्यापार में सहायता देता है।

वेदों के अनुसार, वस्तुतः सभी वेद मन में निहित हैं -

यस्मिन्नृचः साम यजूषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना भाविवाराः।

यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतंप्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥ (यजुर्वेद)

अर्थात् जिस मन में ऋक्, यजु, साम उसी प्रकार स्थित हैं जिस प्रकार रथ के पहिये की धुरी में अरे प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें सारी प्रजा का चित्त ओत-प्रोत है, ऐसा मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो। इसलिए जिसने मन को समझ लिया, सब वेदों को जान लिया। मन को वही समझ सकता है जिसने मन को जीत लिया है।

मनोजयित हृदयमजयित् । (सामवेद)

अर्थात् मैंने मन को जीत लिया, मैंने हृदय को जीत लिया। अतः संसार में अच्छा एवं बड़ा बनने के लिए मन को जीतना बहुत जरूरी है।

हमारी स्वरूपगत विशेषताएँ- महाभारत में उल्लेख है- न हि मानुषात्, श्रेष्ठतरं हि किञ्चित् (मनुष्य से अधिक श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है।)

वेदों में मनुष्य की इस श्रेष्ठता के कारणों पर सम्यक् विचार किया गया है।

प्रकृति की दृष्टि से देखें तो मनुष्य देवों से ही नहीं पशुओं से भी छोटा है। न उसके पास सिंह की ताकत है, न कोयल सा मधुर स्वर। परन्तु मनुष्य अपनी आत्मशक्ति की बदौलत प्रकृति से परे जा सकता है, जो उसे देवों एवं पशुओं से श्रेष्ठ बनाते हैं। यही कारण है कि जो मनुष्य प्रकृति की उपासना में लगे हैं वे देवों से तो आगे कदापि नहीं निकल सकते, अनेक मामलों में पशुओं से भी पिछड़ जाते हैं।

शारीरिक दृष्टि से मनुष्य की रीढ़ की हड्डी पृथ्वी के समानान्तर न होकर उससे 90° के कोण पर सीधा है। इससे वह दो पैरों पर खड़ा होकर दोनों पाँवों को हाथ की तरह प्रयोग में ला सकता है। अपनी

इस विशेषता के कारण वह सभ्यता की दृष्टि से अन्य प्राणियों की अपेक्षा बहुत आगे निकल गया है।

मनुष्य में सौर प्राण का विकास सबसे अधिक है। कृमि पूरे शरीर से पृथ्वी पर सर्पण करता है इसलिए उसमें पार्थिव प्राण सबसे ज्यादा है। हजार या सौ पाँव वाले प्राणियों में कृमि से कम पार्थिव प्राण होते हैं इसलिए उनका शरीर पृथ्वी से ऊपर तो उठता है परन्तु कई पाँवों का सहारा लेना पड़ता है। यानी जैसे-जैसे पार्थिव प्राण की पकड़ कम होती है, पाँवों की संख्या कम होती जाती है। मकड़ी के आठ, चींटी के छः, चार पाँव वाले कीट, चार पाँव वाले पशु, दो पाँव तथा दो पंख वाले पक्षी, बन्दर, तब मनुष्य - यह विकास का क्रम जीवों के प्रकृति के अतिक्रमण करने की क्षमता को दर्शाता है मनुष्य की शारीरिक बनावट सबसे ज्यादा विकसित है।

मनुष्य में प्रकृति के अतिक्रमण करने की क्षमता है जो न पशुओं में है, न देवों में। पशु तथा देव-प्रकृति के द्वारा संचालित होते हैं तथा वे प्राकृतिक नियमों का पालन करते हैं। दूसरी ओर मनुष्य विकल्पों के चुनाव के लिए स्वतंत्र है इसलिए वह अपने कर्तव्य का निर्धारण शास्त्रों के अनुसार करता है। वह सर्वश्रेष्ठ पथ का निर्माता एवं पथिक भी है। सच ही कहा गया है- सबाई उपरे मानुष सत्य तार ऊपरे केउ नाइ।

हमारा परिवेश

हम जान चुके हैं कि मनुष्य ही प्रकृति का अतिक्रमण कर सकता है। हम यह भी जान चुके हैं कि मनुष्य को प्रकृति से पशुओं की अपेक्षा कम ज्ञान मिलता है परन्तु अपनी आत्मशक्ति के द्वारा वह विस्तृत शिक्षा प्राप्त करता है। यह शिक्षा दो स्तरों पर प्राप्त होती है। एक, प्रकृति को जीतने के लिए तथा दो, प्रकृति से ऊपर उठने के लिए। उदाहरणतः सर्दी-गर्मी को जीतने के लिए वातानुकूलन, रोगों को जीतने के लिए औषधियाँ तथा अधिक दूरियों को जीतने के लिए यातायात के साधन - ये विज्ञान के विभिन्न रूप हैं। मानव-मात्र के कल्याण के लिए अपनी चिन्तन शक्ति के द्वारा उसे एक सही राह बताना यह ज्ञान-पक्ष है। उपर्युक्त विज्ञान एवं ज्ञान को क्रमशः सभ्यता एवं संस्कृति कहा जाता है। कहना न होगा कि ये ही मानव की उपलब्धियों के क्रमिक इतिहास को दर्शाते हैं।

सभ्यता एवं संस्कृति - मनुष्य के परिवेश का अहम बिन्दु है- उसकी सभ्यता एवं संस्कृति। सभ्यता भोग है संस्कृति योग। संस्कृति ही सभ्यता को विवेकयुक्त बनाती है। विज्ञान के अनेक आविष्कारों में अस्त्र-शस्त्र का मुख्य स्थान है। आत्मरक्षा तथा अन्यायी से पीड़ितों की रक्षा के लिए शस्त्र बहुत उपयोगी हैं। किन्तु शस्त्र के पीछे संस्कृति न हो तो शस्त्र आत्मरक्षा एवं पीड़ितों की रक्षा के स्थान पर आक्रमण एवं शोषण के साधन बन सकते हैं। दूसरी ओर, अकेले संस्कृति न आत्मरक्षा कर सकती है और न ही अन्याय के विरुद्ध संघर्ष। फलस्वरूप वेदों में अस्त्र-शस्त्रों के साथ ही लड़ाकू योद्धाओं की कामना की गई है।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् - संस्कृति के तीन अंग हैं। बुद्धि को सत्य (धर्म) की, शरीर को शिव (अर्थ)

की तुल्य मन को सुन्दरता (काम) की अपेक्षा होती है। जहाँ तक मोक्ष का सम्बन्ध है, वह इन तीनों से परे आत्मा का स्वभाव है। आत्मा में सत्त्व गुण, शरीर में रजोगुण तथा मन में तमोगुण की प्रधानता होती है। सभ्यता इन तीनों गुणों का मेल है जबकि संस्कृति गुणातीत है। यही कारण है कि सभ्यताओं में विभाजन तो किया जा सकता है किन्तु संस्कृति में नहीं। वेद में संस्कृति को विश्ववारा कहा गया है - सा संस्कृतिः प्रथमा विश्ववारा। यह 'वसुधैव' कुटुम्बकम् का उद्घोष है।

हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के निर्धारण घटकों में हमारी मान्यताएँ, हमारी सामाजिक संस्थाएँ, हमारी पर्यावरण जागरुकता, हमारे पर्व-त्योहार इत्यादि का विशेष स्थान है। आइए वेद की दृष्टि से इन पर विचार करें।

पुरुषार्थ - वेदों में मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थों का उल्लेख है- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। मानव-जीवन की सफलता इनके सम्यक् संतुलन में है। इसके लिए वेदों में सभी के लिए एक सुव्यवस्था का उल्लेख किया गया है।

आज का मनोविज्ञान काम के दमन को बुरा मानता है। वैदिक जीवन-दृष्टि में भी काम को चार पुरुषार्थों में एक पुरुषार्थ माना गया है। इसलिए काम के दमन का प्रश्न ही नहीं है। किन्तु काम का दमन जितना बुरा है उससे ज्यादा बुरा काम का स्वच्छन्द उपभोग है जिसका परिणाम आज एड्स जैसी भयंकर बीमारियों के रूप में आ रहा है। वैदिक दृष्टि से गृहस्थ जीवन सर्वश्रेष्ठ है। गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए ब्रह्मचर्य-पालन को आवश्यक बताया गया है। वस्तुतः मानव की श्रेष्ठता भोग के साथ योग के संतुलन में है और यह सिर्फ मानव ही कर सकता है। आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन-ये चारों मनुष्य एवं पशु में समान रूप से पाए जाते हैं, परन्तु मनुष्य अपनी आत्मशक्ति के द्वारा इनका अतिक्रमण कर सकता है। अतः वेदों का काम-पुरुषार्थ आत्मा को भूले बिना काम को भोगने की सलाह देता है।

काम-पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए पदार्थों का उपभोग 'अर्थ' पुरुषार्थ कहलाता है। वैदिक अर्थव्यवस्था वर्तमान पूँजीवादी एवं समाजवादी व्यवस्था से बिल्कुल अलग है। इस अर्थव्यवस्था का मूल-मंत्र यह है कि चाहे अर्थ हो या काम, इसका मूल धर्म है- धर्मादर्शय कामश्य स धर्मः किम् न सेव्यते। यहाँ धर्म का तात्पर्य कर्तव्यपालन से है। पूँजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था में अधिकार पर बल रहता है जबकि वैदिक अर्थव्यवस्था कर्तव्य पर बल देती है। यह कर्तव्य-बोध आर्थिक क्षेत्र में स्वच्छन्दता पर नियन्त्रण रखता है। यह नियन्त्रण अन्तः स्फूर्त है, बाह्यारोपित नहीं। तात्पर्य यह कि वैदिक अर्थव्यवस्था में समाजवाद की कठोरता एवं पूँजीवाद की स्वार्थपरता का अभाव है।

वैदिक परम्परा का धर्म चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास के निर्धारित कर्तव्यों के पालन पर आधारित है। ब्रह्मचर्य आश्रम में मन में संयम द्वारा शरीर को सशक्त एवं बुद्धि को विकसित किया जाता है। गृहस्थ आश्रम में यश, धन एवं पुत्र की कामना की पूर्ति की जाती है। गृहस्थाश्रम में जो धर्म कर्म-प्रधान है वह वानप्रस्थ में उपासना प्रधान हो जाता है। यही धर्म जब

ज्ञान-प्रधान बनता है तो संन्यास आश्रम सिद्ध होता है। यह अन्तिम आश्रम है क्योंकि ज्ञान से पुरुष को नहीं है-न हि ज्ञानात्परं किञ्चित्। चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष तीनों पुरुषार्थों के सम्यक् परिपालन से प्राप्त होता है।

वर्णाश्रम व्यवस्था- ऋग्वेद के पुरुषसुक्त में उल्लिखित है -

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरु तदस्य यद्वैश्यं पदभ्यो शूद्रो अजायत ॥

अर्थात् पुरुष का मुख ब्राह्मण बना, भुजाएँ क्षत्रिय बनीं। जंघाएँ वैश्य बनीं और पाँवों से शूद्र उत्पन्न हुआ। स्पष्टतः यह रूपक चारों वर्णों को पूरक एवं सहयोगी मानता है। पश्चिम विकास का आधार स्पर्धा मानता है जबकि वेद विकास का आधार पारस्परिक सहयोग को मानता है।

कुछ लोग वर्ण व्यवस्था पर विषमता का आरोप लगाते हैं। तर्क यह है कि वेद में शूद्र को पाँव से उत्पन्न बताया गया है। परन्तु वे भूल जाते हैं कि इतने मात्र से ही शूद्र हेय नहीं हो जाता। ऋग्वेद के पुरुषसुक्त में ही भूमि को पुरुष के पाँव से उत्पन्न बताया गया है तथा उसे माता माना जाता है। क्या पाँव से उत्पन्न भूमि को माता मानना उसको हेय मानना है? वस्तुतः शूद्र समाज की नींव है जो नीचे रहकर भी आधार का कार्य करता है।

चारों आश्रमों की व्यवस्था कर्तव्यपालन से जुड़ी हुई है जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

हमारा पर्यावरण - वेदों की दृष्टि से कोई पदार्थ जड़ नहीं है, क्योंकि प्राण सबमें हैं। पृथ्वी माता पुत्रोऽहं पृथ्वियाः अथर्ववेद का यह सूत्र वाक्य है। वस्तुतः प्राणयुक्त पृथ्वी ही हमारी माँ हो सकती है, जड़ पृथ्वी नहीं। पृथ्वी के प्राण का नाम अग्नि है। उसी प्रकार द्युलोक के प्राण का नाम आदित्य तथा अन्तरिक्ष लोक के प्राण का नाम वायु है। यह अग्नि, वायु और आदित्य ही समस्त सृष्टि के आधार हैं। ये तीनों भी वस्तुतः एक ही अग्नि के विभिन्न रूप हैं। अग्नि का घन रूप अग्नि है, तरल रूप वायु है और विरल रूप आदित्य है उसी प्रकार वैदिक दृष्टि एक में अनेक और अनेक में एक को देखती है।

भूमि से अधिक महत्वपूर्ण उसका वातावरण है जिसे उसका महिमामण्डल कहा जा सकता है। उस महिमामण्डल में भूमि ही नहीं, अन्तरिक्ष एवं द्यौ भी शामिल हैं। उनके तीन देवताओं अग्नि, वायु एवं आदित्य की चर्चा ऊपर कर चुके हैं। इनमें अग्नि रस है, वायु रसतर है और आदित्य रसतम है। इसलिए जितनी हानि भूमि को क्षति पहुँचाने से होती है उससे अधिक हानि वायु को क्षति पहुँचाने से होती है। ओजोन-छिद्र का संकट वायुमण्डल से ही जुड़ा हुआ है। हमारे अन्न में तीनों का ही योगदान रहता है। अन्न में अग्नि से दधि, अन्तरिक्ष से घृत और आदित्य से मधु का आधान होता है। कृत्रिमरूप से तैयार या पकायी गयी फसल में पार्थिव तत्व की प्रधानता हो जाती है, वायु एवं आदित्य तत्व की न्यूनता। फलतः उसमें घृत तथा मधु तत्व कम रह जाता है। घृत की कमी के कारण स्निग्धता नहीं रहती और मधु की कमी से मिठास नहीं आ पाती। ऐसा अन्न खानेवाले के व्यवहार से स्निग्धता एवं

मधुरता गायब हो जाती है और परिणाम होता है अमानुषिक व्यवहारों में वृद्धि के रूप में ।

वेदों में मनुष्य को जिन चीजों की आवश्यकता है उन्हें छः शब्दों द्वारा प्रकट किया गया है - अन्न, अन्नाद, प्रजा, पशु, कीर्ति एवं ब्रह्मवर्चस् । इनमें अन्न एवं अन्नाद का सम्बन्ध पार्थिव मण्डल से, पशु एवं प्रजा का सम्बन्ध चन्द्र मण्डल से तथा कीर्ति एवं ब्रह्मवर्चस्, का सम्बन्ध सौर-मण्डल से है । इस प्रकार मनुष्य की सभी आकांक्षाएँ पर्यावरण से जुड़ी हैं और पर्यावरण का दूषित होना जीवन का दूषित होना है ।

अथर्ववेद वेद के पृथ्वी सूक्त में 63 मन्त्र हैं जिनमें शस्य श्यामला पृथ्वी का गौरव गान करने के साथ ही पर्यावरण की चिन्ता भी स्पष्ट झलकती हैं । इसका संकेत देने के लिए एक मंत्र उद्धृत है।

यत् में भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु ।

मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् ॥

अर्थात् हे भूमे ! तुम्हारे जो कन्द मूल आदि हम खोदते हैं वे शीघ्र ही पुनः उत्पन्न हो जाएँ क्योंकि हमने तुम्हें खोदते समय तुम्हारे मर्म को आघात नहीं पहुँचाया है, तुम्हारे हृदय पर चोट नहीं लगाई है। हमारे पर्व-त्योहार - वैदिक संस्कृति में व्यष्टि एवं समष्टि की साधना का अद्भुत समन्वय है । व्यष्टि के चार पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, मोक्ष एवं काम - को समष्टि के स्तर पर प्रतिष्ठापित करने के लिए क्रमशः चार पर्व - विजयादशमी, दीपावली, होली एवं रक्षा-बन्धन के आयोजन का विधान किया गया है । अधर्म पर धर्म की विजय का डंका बजता है विजयादशमी के दिन, नवरात्र की शक्ति-उपासना के अनन्तर शस्त्र पूजा द्वारा तथा राक्षसी वृत्ति के प्रतीक रावण के पुतला दहन के माध्यम से । अर्थ-पुरुषार्थ की सामूहिक उपासना दीपावली में दीप प्रज्ज्वलन एवं लक्ष्मी पूजन के रूप में होती है। सामान्यतः लक्ष्मी मदान्ध बनाती है परन्तु दीपावली में उलूकवाहिनी लक्ष्मी की नहीं, वरन् ज्ञान-ज्योति समन्विता पद्मवासना लक्ष्मी की पूजा की जाती है, जो व्यक्ति को श्री अर्थात् श्रेष्ठता एवं विभूति प्रदान करती है । दीपावली का अर्थ पुरुषार्थ ही साधन बनता है कामनाओं की पूर्तिरूप उस काम पुरुषार्थ का जो नयी फसल की सोंधी सुगंध एवं रस-रंग से सबको डूबो देता है । इस काम-पुरुषार्थ में जब खरे-खोटे की पहचान करने पर असत्य की होलिका जल जाती है और सत्य का प्रह्लाद शेष रह जाता है तो प्रादुर्भाव होता है - चरम पुरुषार्थ मोक्ष का रक्षा-बन्धन के रूप में । रक्षा-बन्धन में यज्ञोपवीत-धारण कर हम पितृ ऋण, देव ऋण तथा ऋषि ऋण के तीन ऋणों से मुक्त होने के संकल्प को प्रतिवर्ष दुहराते हैं । उस प्रकार इस विराट देश का जनमानस प्रतिवर्ष अपने पुरुषार्थों को साधता चला आ रहा है ।

हमारा विश्व

यह ब्रह्माण्ड कैसे बना- वेदों में इसे नासदीय सूक्त के माध्यम से समझाया गया है । इसके अनुसार, सृष्टि के आरम्भ में न सत्य था, न ही असत्, न कोई क्रिया थी और न ही आकाश । इस समय जो था उसे वेद में 'तदेकम्' कहा गया है । तात्पर्य यह कि उस समय केवल एक ही तत्व था

जिसे 'तत्' कहा गया । आगे कहा गया है- एकं वा इदं विबभूव सर्वम् (एक ही वह यह सब कुछ बन गया) । लेकिन क्यों ? असीम ब्रह्म को उसकी 'माया' शक्ति ने ससीम रूप प्रदान किया और उसी में सृष्टि-निर्माण की इच्छा उत्पन्न हुई । इसमें जीवों के परिपक्व कर्मों ने भी योगदान दिया (सृष्टि एवं प्रलय एक चक्र की भाँति चलता रहता है) । यह ध्रुव सत्य है कि अच्छे या बुरे कर्म का फल तो होता ही है और उसको भोगने के लिए विश्व का अस्तित्व आवश्यक है । इस तरह तीन तत्व सृष्टि के मुख्य कारण बनते हैं - जीवों के कर्म, ब्रह्म की शक्ति माया और अव्यय पुरुष की कामना । यदि जीवों के कर्म न हों तो अव्यय पुरुष के मन में सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा ही जन्म नहीं लेगी और यदि ब्रह्म की माया की शक्ति ब्रह्म को ससीम न बनाए तो कामना उत्पन्न नहीं होगी क्योंकि असीम की कामना उत्पन्न नहीं होती ।

केवल ब्रह्म की कामना से सृष्टि नहीं हो सकती । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार, 'प्रजापतिरकामयत् सोऽश्राम्यत् स तपोऽतप्यत् (प्रजापति ने कामना की, उसने श्रम किया, उसने तप किया) । कामना मन ने की, तप प्राण ने किया और श्रम वाक् ने किया । तप और श्रम में अन्तर यह है कि तप अन्तर्व्यापार है जिसके तहत योजना बनायी जाती है और श्रम बहिर्व्यापार है जिसके तहत योजना कार्यान्वित की जाती है । सृष्टि के सारे कार्य इन्हीं तीन केन्द्रों-कामना, तप एवं श्रम पर आधृत हैं ।

त्रयी विद्या - हमारे ज्ञान के तीन विषय हैं - शरीर, प्राण एवं मन । वेद इन तीनों के बारे में बताते हैं इसलिए वेद को त्रयी विद्या कहा जाता है । वैसे तो वेद चार हैं परन्तु अथर्ववेद अलग कोटि का है । शेष तीन- ऋक्, यजु और साम - ही त्रयी कहलाते हैं । इस त्रयी विद्या के अन्तर्गत ही सम्पूर्ण सृष्टि समाहित है जिसे निम्नलिखित सारणी से समझा जा सकता है ।

वेद	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद
सम्बद्ध देव	अग्नि	वायु	आदित्य
सम्बद्ध लोक	पृथ्वी	अन्तरिक्ष	द्युलोक
पिण्ड	पदार्थ	गति	तेज
व्यक्ति	शरीर	प्राण	मन
समाज	वैश्य	क्षत्रिय	ब्राह्मण
प्राण	प्राण	अपान	व्यान

विश्लेषण हेतु समाज का उदाहरण लेते हैं । चूँकि पदार्थ या वस्तुओं के उत्पादन से वैश्य का सम्बन्ध है इसलिए सम्बद्ध वेद ऋक् होगा । गति या शूरवीरता के कारण क्षत्रिय का सम्बन्ध यजुर्वेद से होगा तथा ज्ञान (तेज) के कारण ब्राह्मण का सम्बन्ध सामवेद से होगा ।

त्रिविध पुरुष - वेदों के अनुसार, पुरुष जो ब्रह्म का ससीम रूप है, से ही संसार की उत्पत्ति हुई है । पुरुष के तीन रूप हैं - अव्यय, अक्षर एवं क्षर । सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो अपने सूक्ष्म रूप में जो अव्यय

है वही थोड़ा स्थूल होने पर अक्षर और अधिक स्थूल होने पर क्षर बन जाता है। वह सामग्री जिससे यह सृष्टि बनी, क्षर पुरुष कहलाती है। इसे समझने के लिए हम जंगल का उदाहरण ले सकते हैं। जंगल में कई पेड़ होते हैं परन्तु इससे कुछ निर्मित नहीं होता, उस जंगल में लगे एक पेड़ से भी कुछ नहीं बनता। मेज, कुर्सी आदि तभी बन सकेंगे जब उस पेड़ की शाखा काटी जाए। यहाँ जंगल के अव्यय पुरुष, पेड़ को अक्षर पुरुष एवं शाखा को क्षर पुरुष समझा जा सकता है।

यज्ञ-वेद में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ की इस सृष्टि का आधार है। यज्ञ एक रासायनिक क्रिया की तरह है जिसमें एक पदार्थ दूसरे पदार्थ से मिलकर एक नवीन पदार्थ की उत्पत्ति करता है। उदाहरणतः अग्नि में आहुति (घृत आदि) डालने पर वह उसी में आत्मसात होकर अग्नि विकसित करता है। ऐसे कई यज्ञ सृष्टि में निरन्तर चलायमान हैं। जैसे - बीज का पृथ्वी में बोया जाना, अन्न का उदर में डाला जाना आदि। यहाँ बीज एवं अन्न आहुति (सोम) है और पृथ्वी तथा जटराग्नि अग्नि है। तात्पर्य यह कि सम्पूर्ण जगत् में यज्ञ की प्रक्रिया निरन्तर चल रही है और अग्नि को सोम की आहुति जारी है। सृष्टि का यही रहस्य है।

काल-काल की महत्ता वेदों में भी बतायी गयी है और मनुष्य को कालजयी बनने की सलाह दी गयी है। तात्कालिक सुख को त्यागकर दीर्घकालिक हित की साधना करना ही कालजयी बनना है। भ्रष्टाचार, पर्यावरण-प्रदूषण, हत्या, लूट इत्यादि प्रवृत्तियाँ मनुष्य की क्षणिक सोच से ही उपजती हैं। अतः वेदों का मार्ग शाश्वतसुख का मार्ग है।

वेदों में काल को युगों में बाँटा गया है - सतयुग त्रेतायुग, द्वापर युग एवं कलियुग। ऐतरेय ब्राह्मण में इनकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है।

कलि शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।

उत्तिष्ठैस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यतेचरन् ॥

अर्थात् सोना कलियुग है, अँगड़ाई लेना द्वापर है, उठ खड़े होना त्रेता है और गतिशीलता सतयुग है। इस तरह व्यक्ति का आलस्य में होना कलियुग है और पुरुषार्थ में लगना सतयुग है। सुव्यवस्थित राज सतयुग का प्रतीक है जबकि अन्याय, बेईमानी, हिंसा से युक्त राज कलियुग है। अतः व्यक्ति स्वयं के लिए एवं राजा राज्य के लिए युग निर्माता होता है।

ये रही वेदों की एक झलक। मुझे लगता है इस डलिया में मैं वेदोद्यान से सेमल के ही पुष्प चुन सका हूँ, रजनीगंधा, गुलाब एवं हरसिंगार के फूलों तक मेरी पहुँच नहीं हो सकी है। संभव है, शेष त्रिधियाँ किसी अन्य परिश्रमी शोधकर्ता के हाथ लगें।



संध्या नमन

श्री रामाधार राय

वरिष्ठ लेखाकार

हे संध्या! मेरा नमन तुझे ।
 मंत्री जी, सत्ताच्युत हुए,
 अफसर ऑफिस वगैरे छोड़ चले ।
 भीड़ ने बदली अपनी राहें,
 चमचे भी नीड़ को तोड़ चले ।
 उगते सूरज को नमन किया,
 डूबते सूरज को क्या करना ?
 हे संध्या ! मेरा नमन तुझे ।
 नूतन से पप्पू, बेबी तक,
 नर-देव से लेकर देवी तक,
 नौकर से नौकरशाहों तक,
 उत्साह, उमंग से आहों तक,
 सबको शांति का दान दिया,
 तुमने सबका सम्मान किया ।
 हे संध्या! मेरा नमन तुझे ।
 अपनी ही ज्वाला में जब जलकर राख हुआ,
 जलती धरती, जलते सूने से तपकर जब मैं खाक हुआ,
 अपने शीतल सीने में रख तुमने मुझे त्राण दिया,
 शबनम की अमृत वर्षा से,
 मैं मरा पड़ा था, प्राण दिया ।
 तुझे न भूलने की कसमे खाई,
 अहर्निश यादों का वादा भी किया
 पर रात गई, और बात गई,

सारे वादों का दफन किया ।
 हे संध्या ! मेरा नमन तुझे ।
 कुरुक्षेत्र में जब भाई ने भाई का संहार किया,
 परिजन ने परिजनों का,
 शिष्यों ने गुरु पर वार किया,
 गोदी सूनी, आँचल सूना चीत्कार प्रभु न रोक सके
 युद्ध की भीषण ज्वाला में,
 न शान्ति का पानी झोंक सके ।
 इतिहास साक्षी है,
 हे संध्या ! तब तुमने युद्ध को शांत किया
 योद्धाओं के अट्टहासों से रोती धरा को मुक्त किया
 हे संध्या, मेरा नमन तुझे ।
 पप्पू भी बढ़ा, बेबी भी बढ़ी,
 नूतन भी अपने घर को चली
 सब भूल गये, स्व वतन गये,
 मीठी-मीठी यादें भी गई,
 मानव तो केवल मानव है,
 क्योंकि वह तुझको याद करे ?
 अपने स्वार्थ में लीन बसे,
 क्यों वह समय बर्बाद करे ?
 बेवस, असहाय की वेदी पर उसने कब आँसू बहाया
 मुर्दों, कफनों की कीमत पर भव्य महल बनवाया
 हे संध्या ! मेरा नमन तुझे ।

